राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 34 अंक 7 सितम्बर 2012 नई दिल्ली मूल्य 5 रु. पृष्ठ 36

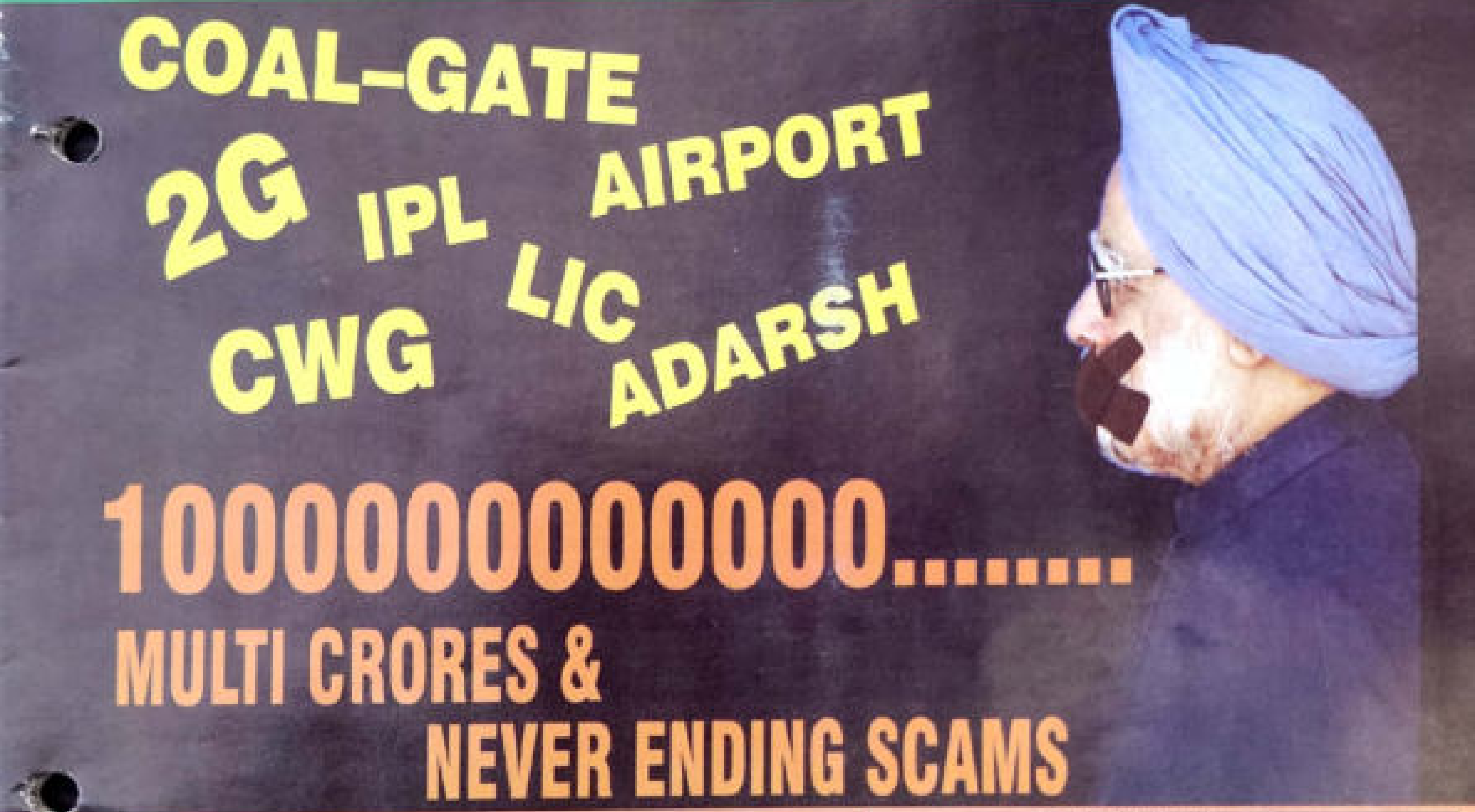

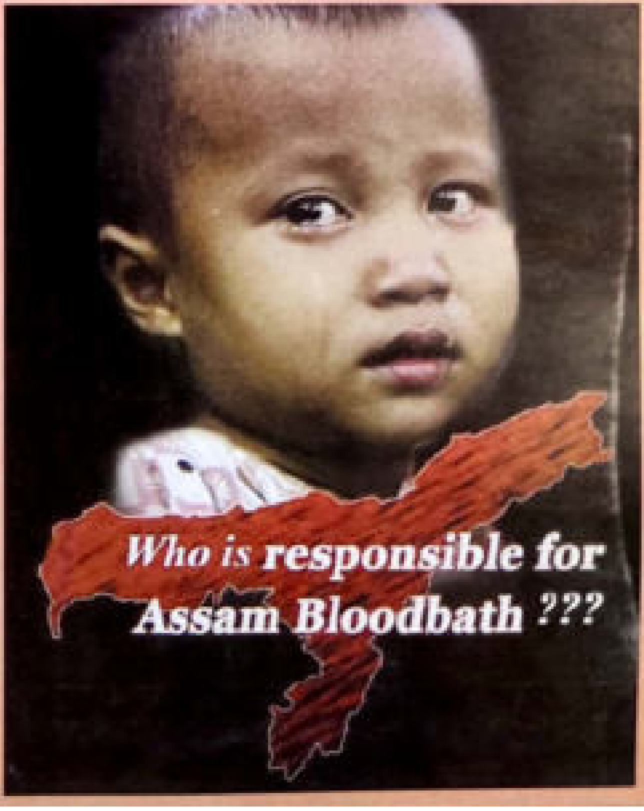

विश्वविद्यालय में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा शैक्षिक समस्याओं को लेकर मध्य प्रदेश के राज्यपाल श्री रामनरेश यादव के साथ चर्चा करता हुआ अभाविप का प्रतिनिधी मंडल

हिमाचल प्रदेश में छात्र संघ चुनाव की जीत का जश्न मनाते हुए कार्यकर्त्ता

राष्ट्रीय छात्रशक्ति

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

संपादक

आशुतोष

संपादक मण्डल

अवनीश सिंह

संजीव कुमार सिन्हा

फोन : 011-43098248

ई-मेल : chhatrashakti.abvp@gmail.com

ब्लॉग : chhatrashakti.abvp.blogspot.com

वेबसाइट : www.abvp.org

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए राजकुमार शर्मा द्वारा बी-50, विद्यार्थी सदन, क्रिश्चियन कॉलोनी, निकट पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली-110007 से प्रकाशित एवं मॉडर्न प्रिन्टर्स, के-30, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 द्वारा मुद्रित।

संपादकीय कार्यालय

"छात्रशक्ति भवन"

690, भूतल, गली नं 21,

फैज रोड, करोलबाग,

नई दिल्ली-110005.

अनुक्रमणिका

संपादकीय 4

असम हिंसा पर अध्ययन दल की रिपोर्ट 5
(अभिषेक रंजन)

असम हिंसा के विरोध में राष्ट्रव्यापी प्रदर्शन 7

कोयले के बाद अब क्या लूटेगी मनमोहन सरकार? 9
(सुनील आंबेकर)

भ्रष्टाचार के खिलाफ सड़क पर उतरे युवा 11

प्रा. बालासाहब आपटे और मैं - संस्मरण 15
(मदनदास देवी)

प्रतिभा को सम्मान 17

बाजारवाद के दौर में हिन्दी भाषा का बदलता स्वरूप 19
(डॉ. राजनारायण शुक्ला)

देशभर में हुए छात्र संघ चुनाव में परिषद को मिली ऐतिहासिक सफलता 21

'नेशनलिज्म डेफिसिट' का शिकार एक देश 23
(स्वदेश सिंह)

केवल चिंतक ही नहीं कृतिवीर थे आपटे जी 26
(सदाशिव गौ. देवधर)

असम हिंसा की सचित्र झलक 28

वैधानिक सूचना

राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली है।

संपादकीय...........

असम के बोडो क्षेत्रीय परिषद प्रशासित इलाके में जारी हिंसा ने समूचे देश का ध्यान खींचा है। घटना के तात्कालिक कारणों के बारे में मतभेद भी हो सकता है और यह प्रश्न भी उठाया जा सकता है कि बिना पूरी जांच हुए यह निष्कर्ष नहीं निकाला जाना चाहिये कि हिंसा की पहल किसने की। लेकिन इस हिंसा की नौबत क्यों आयी, इसमें जांच के लिये कुछ भी बाकी नहीं है।

80 के दशक के प्रारंभिक वर्षों में बांग्लादेशी घुसपैठ के विरुद्ध चले आंदोलन ने घुसपैठ की समस्या को रेखांकित किया था। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने न केवल इस घातक समस्या से पूरे देश को अवगत कराया बल्कि गुवाहाटी में प्रभावी प्रदर्शन कर असम के स्थानीय समाज को विश्वास दिलाया कि पूरा देश उनके साथ है। अभाविप के आह्वान पर पूरे देश से गुवाहाटी पहुंचे छात्रों को तत्कालीन सरकार के इशारे पर बर्बर हिंसा का शिकार भी होना पड़ा था।

15 अगस्त 1985 को नयी दिल्ली में ऑल असम स्टूडेंट्स यूनियन और ऑल असम गण संग्राम परिषद के साथ केन्द्र सरकार द्वारा किये गये समझौते में यह स्पष्ट कहा गया कि सरकार घुसपैठियों की पहचान कर उन्हें देश से बाहर करेगी, अंतरराष्टीय सीमा पर बाड़ लगायेगी तथा क्षेत्र के विकास के लिये गंभीर प्रयत्न करेगी। यह भी स्पष्ट उल्लेख है कि उक्त समझौते के पूर्ण क्रियान्वय की जिम्मेदारी केन्द्रीय गृह मंत्रालय की होगी। केन्द्रीय गृह सचिव ने इस समझौते पर हस्ताक्षर कर इसे लागू करने की जिम्मेदारी ली थी। तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी स्वयं इस समझौते के समय उपस्थित थे। उनके हस्ताक्षर भी समझौता पत्र पर मौजूद हैं।

केन्द्र सरकार द्वारा 27 वर्ष पूर्व किये गये इस समझौते की निरंतर अवहेलना ने स्थानीय समाज में आक्रोश को जन्म दिया है। यही ऐसी घटनाओं के भड़कने का मूल कारण है। तात्कालिक घटनाक्रम जांच का विषय हो सकता है लेकिन जब तक मूल समस्या के निदान के लिये ठोस प्रयास नहीं किये जायेंगे, ऐसी घटनाओं पर रोक लगना मुश्किल है।

असम की घटना का संदर्भ लेकर युवा चिन्तक स्वदेश सिंह ने एक विचारोत्तेजक लेख लिखा है। हम इस अंक में उसे सम्मिलित कर रहे हैं। हिन्दी दिवस के अवसर पर डॉ राजनारायण शुक्ला द्वारा लिखा लेख भी विचार के लिये हमारे समक्ष है। राष्ट्रभाषा की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करने का यह भी एक कोण संभव है।

कोयले की दलाली में प्रधानमंत्री का दामन भी दागदार हुआ है। अपने ही एक अंग (नियंत्रक एवं महा लेखा परीक्षक) पर हमला करने से पहले यह स्मरण करना चाहिये कि उनके ही एक पूर्ववर्ती प्रधानमंत्री ने कहा था कि नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की रिपोर्ट पर चर्चा नहीं, कार्रवाई होती है। यह प्रधानमंत्री के लिये अच्छा होगा कि वे इसकी न्यायिक जांच के लिये तुरंत सिफारिश करें। यह प्रधानमंत्री पद की गरिमा बनाये रखने के लिये आवश्यक कदम है। देश की प्रतिष्ठा के लिये भी यह जरूरी है कि कम-से-कम प्रधानमंत्री पद की साख बरकरार रहे। जितनी जल्दी यह संभव हो उतना ही अच्छा होगा। घोटाले में सामने आये तथ्यों का संकलन कर श्री सुनील आम्बेकर ने इसे सहज रूप से समझने योग्य बना दिया है।

स्व. बाल आपटे जी का संगठन से संबंध अटूट रहा। उनके साथ तीन दशक से भी अधिक तक संगठन कार्य को गति देने वाले वरिष्ठ कार्यकर्ता मा. मदन दास जी तथा मा. सदाशिवराव देवधर के संस्मरण देर से मिल पाने के कारण इस अंक में जोड़े गये हैं। निश्चय ही नयी पीढ़ी के कार्यकर्ता उन्हें पढ़ कर उस कालखण्ड का अनुमान लगा सकेंगे जब संगठन का वर्तमान स्वरूप गढ़ा जा रहा था। देश भर में नये सत्र के प्रारंभ होने के साथ ही विभिन्न प्रकार की गतिविधियां प्रारंभ हो गयी हैं। राजस्थान, गुजरात, हिमाचल प्रदेश में सम्पन्न हुए छात्रसंघ चुनावों में परिषद ने संतोषजनक प्रदर्शन किया है। दिल्ली सहित अनेक विश्वविद्यालयों में छात्र-संघ चुनाव की हलचल जारी है। इनके समाचारों के साथ राष्ट्रीय छात्रशक्ति का सितम्बर अंक आपके समक्ष है। ■

वोट बैंक के लालच में अवैध घुसपैठ को बढ़ावा

हिंसा प्रभावित क्षेत्र के दौरे पर गयी विद्यार्थी परिषद् के अध्ययन दल की रिपोर्ट

■ अभिषेक रंजन

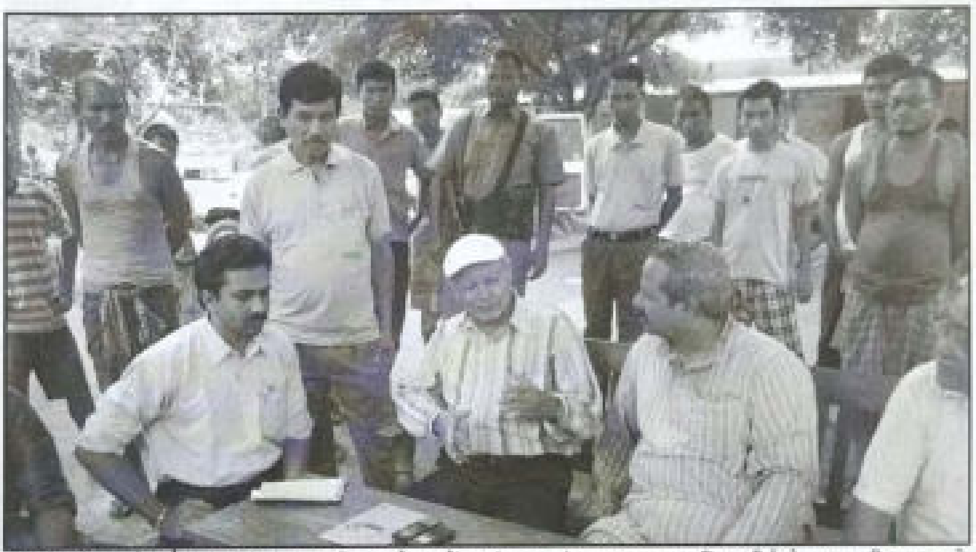

अपने भेंट के दौरान हिंसा प्रभावित क्षेत्र में सांसद संगसुमा बसुमुतियारी से बातचीत करते हुए क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्रीहरि बोरिकर तथा राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर।

नई दिल्ली/गुवाहाटी। असम में जारी हिंसा के मूल में बंगलादेशी घुसपैठ है। वोट बैंक के लालच में इस हिंसा को जातीय हिंसा बताकर घुसपैठ की समस्या और उससे उत्पन्न खतरे को नकारने की कोशिश केंद्र सरकार व राज्य सरकार कर रही है। सरकारी संरक्षण में अपने ही देश में भारतवासी शरणार्थी बनकर जीने को मजबूर है वहीं दूसरी तरफ घुसपैठियों को मेहमान की तरह खातिरदारी की जा रही है।

असम के दौरे पर गए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के अध्ययन दल की रिपोर्ट में ऐसे ही कुछ तथ्य सामने आये।

असम के बोड़ो क्षेत्र (BTAD) तथा सीमावर्ती जिलों में हुई हिंसा का अध्ययन करने गए अखिल भारतीय परिषद (ABVP) के अध्ययन दल ने असम में भड़के दंगों की घटनाओं को बांग्लादेशी घुसपैठियों द्वारा रचा गया पूर्व नियोजित एवं राजनीति से प्रेरित षडयंत्र बताया।

दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र के सह संगठन मंत्री श्री सुनील आंबेकर व श्री जी. लक्ष्मण के नेतृत्व में असम गए अध्ययन दल ने अपनी जाँच में घुसपैठियों द्वारा बोडो समाज के ऊपर लगाए गए हिंसा के आरोप, जिसके प्रत्युत्तर के रुप में 20 जुलाई को 4 बोडो युवकों की नृशंस हत्या कर दी गई, को निराधार पाया। इससे साफ पता लगता है कि अपनी ही जमीन से बेदखल करने के उदेश्य से बोडो हिन्दुओं को मारा गया। केंद्र व राज्य सरकार की इस पूरे घटनाक्रम को लेकर अकर्मण्यता व मौन समर्थन का सबसे बड़ा सबूत इस बात से मिलता है कि जिस 19 जुलाई के हमले में ऑल असम माइनॉरिटी स्टूडेंट यूनियन (AAMSU) और ऑल बीटीएडी माइनॉरिटी स्टूडेंट यूनियन (ABMSU) के कार्यकर्ताओं पर गोलियां चली और दंगे भड़काए गए, उस हमले को अंजाम देनेवाले हमलावरों की भी अबतक पहचान नहीं हो पायी है। जमीनी सच्चाई जानने के क्रम में यह खुलेआम देखने को मिला कि असम के अन्दर बांग्लादेशी घुसपैठियों को ऑल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (AIUDF) के अध्यक्ष सांसद बदरुद्दीन अजमल का खुला समर्थन प्राप्त है तथा वर्तमान तरुण गोगोई सरकार उन्हें संरक्षण और जरुरी सुविधाएं मुहैया करवा रही है।

अपने दो दिवसीय धुबरी, कोकराझार और चिरांग जिलों के प्रवास में इस अध्ययन दल की तीन टीमों ने अनेक दंगा पीड़ितों, समाज के प्रमुख व्यक्तियों, छात्र नेताओं, सरकारी अधिकारियों, स्थानीय सुरक्षाकर्मियों, मीडिया तथा अन्य सभी सम्बंधित लोगों से भेंट की।

धुबरी प्रवास के दौरान अध्ययन दल ने मुस्लिम शिविरों में रह रहे कुछ

शरणार्थियों से उनके पते व गांवो के नाम पूछे तो पता चला कि वे यह बता पाने में भी असमर्थ थे। दल ने यह भी पाया कि हिंसा समाप्त होने पर भी राहत शिविरों में मुस्लिम समुदाय की संख्या इन क्षेत्रों में रहने वाली कुल मुस्लिम आबादी से भी अधिक हैं। इससे यह पता चलता है कि किस प्रकार शरणार्थियों की आड़ में अवैध घुसपैठ जारी है।

असम के हिंसा प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करने वाले अध्ययन दल ने अपनी जाँच में यह भी पाया कि राज्य व केंद्र सरकार द्वारा असम में बांग्लादेशी घुसपैठियों की उपस्थिति को नकारना कांग्रेस सरकार की वोट बैंक की राजनीति है।

अनेक आंकड़े यह साबित करते है असम की कुल जनसंख्या में बांग्लादेशी घुसपैठियों का प्रतिशत बढ़ता ही जा रहा है और 2011 की जनगणना के अनुसार वर्तमान स्थिति यह है कि असम के 27 जिलों में से 11 जिले बांग्लादेशी घुसपैठियों की वजह से मुस्लिम बाहुल्य वाले हो गए हैं। सबको पता है कि बढ़ी हुई जनसंख्या भारत के लोगों की नहीं है। यह आंकड़ा महज असम तक सीमित नहीं है। कमोबेश यही स्थिति भारत के कई राज्यों की है। ऐसे में जबकि भारत की सीमा अपने पड़ोसियों की अवांछित गतिविधियों के चलते असुरक्षित है, एक संप्रभु राष्ट्र भारत के लिए यह न केवल चिंताजनक स्थिति है बल्कि पूरे राष्ट्र की सुरक्षा के लिए बहुत बड़ा खतरा भी है। आये दिन अनेक आतंकी गतिविधियों में बांग्लादेशी घुसपैठियों की संलिप्तता सामने आ रही है। देश में घुस आये इन अवैध घुसपैठियों ने अपनी संख्या बढ़ते ही धीरे-धीरे स्थानीय भारतीयों के हक छीनना शुरू कर दिया है।

ऐसा भी नहीं है कि यह समस्या तत्काल उत्पन्न हो गयी हो। इस समस्या से न तो सरकार और न ही चुनाव आयोग अनजान है, लेकिन वोट बैंक की राजनीति से प्रेरित मानसिकता न केवल अवैध घुसपैठ को बढ़ावा दे रही है बल्कि उन्हें संरक्षण भी दे रही है।

बोड़ो टेरिटोरियल कौंसिल चीफ श्री हाग्रामा मोहिलारी के साथ अभाविप का प्रतिनिधि मंडल।

असम की हिंसा के बाद देशभर में उत्तर पूर्वी राज्यों, विशेषकर असम के छात्रों के साथ मारपीट की घटना की निंदा करते हुए एवं असम के लोगों को पूरे देश में समर्थन और सुरक्षा का भरोसा देते हुए अध्ययन दल ने उत्तर पूर्वी राज्यों के छात्रों से अपील की, कि वे अफवाहों से दूर रहे तथा धमकियों के प्रभाव में न आते हुए अपने अपने स्थानों पर डटे रहे। डरने और जगह छोड़ने से भारत विरोधियों के हौसले मजबूत होंगे जो कतई भारत के हित में नहीं है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का प्रत्येक कार्यकर्ता पूरी मजबूती के साथ आपके समर्थन और सहयोग में तत्परता से खड़ा है।

विद्यार्थी परिषद के इस जाँच दल ने अपनी रिपोर्ट के माध्यम से बांग्लादेश की सीमा को तुरन्त सील करने की मांग की है। साथ ही साथ देश में अवैध तरीके से घुसपैठ कर चुके बांग्लादेशियों की पहचान कर, उन्हें अविलम्ब देश से निकालने की मांग की है।

आनेवाले दिनों में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद असम में हिंसा की भयावहता को जानने गये अपने अध्ययन दल के अनुभवों व यथास्थिति की जाँच के विस्तृत रिपोर्ट को तैयार करके पूरे देश में जनजागरण अभियान चलाएगी। उल्लेखनीय है कि विद्यार्थी परिषद द्वारा अवैध घुसपैठ की समस्या और उससे होने वाले खतरे से सरकार को बहुत पहले से ही अवगत कराती रही तथा अनेक आन्दोलन भी किये। विद्यार्थी परिषद् 1982 से बांग्लादेशी घुसपैठ के विरूद्ध लगातार आंदोलन कर रही है, जिसमें 2007 में भारत-बांग्लादेश सीमा पर सीमा सर्वेक्षण तथा 2008 में 50000 विद्यार्थियों का "चलो चिकन नेक" के नारे के साथ घुसपैठ प्रभावित किशनगंज, बिहार में किया गया आंदोलन प्रमुख है।

हाल की असम हिंसा के विरुद्ध भी गत 31 जुलाई को पूरे देश के लगभग 400 स्थानों पर 45,000 से अधिक छात्र-छात्राओं ने विरोध प्रदर्शन किया। ■

घुसपैठियों को संरक्षण देना बंद करे सरकार

बांग्लादेशी घुसपैठ तथा असम में बोडो जनजाति पर हमलों के खिलाफ सडकों पर उतरी छात्रशक्ति, बांग्लादेशियों को भगाने की सरकार से की मांग

दिल्ली विश्वविद्यालय में असम हिंसा के विरोध में प्रदर्शन करते छात्र

नयी दिल्ली। बांग्लादेशी घुसपैठ तथा असम में बोडो जनजाति पर हुए हमलों के खिलाफ पूरे देश में छात्र-युवाओं का रोष देखने को मिला। असम में जारी हिंसा के जिम्मेदार तथा अवैध तरीके से भारत में घुसपैठ कर चुके बांग्लादेशियों के खिलाफ जब अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने अखिल भारतीय विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया इसमें पूरे देश के युवा समर्थन में सड़को पर उतर अपना विरोध जताया तथा सरकार से घुसपैठियों को संरक्षण देना बंद करके भारत से अविलम्ब बांग्लादेशियों को भगाने की मांग की ।

दिल्ली विश्वविद्यालय के नार्थ कैम्पस में छात्र असम के हिंसा में पीड़ित भारतवंशियों के समर्थन में इकट्ठा हुए और सभा का आयोजन कर अपना विरोध जताया। सभा को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय महामंत्री उमेश दत्त ने कहा कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद असम के अनेक जिलों में हो रही हिंसा व राष्ट्र विरोधी गतिविधियों के लिए बंगलादेशी घुसपैठियों को जिम्मेदार मानती है। इस क्षेत्र में वर्षो से बंगलादेशी घुसपैठ कर जनजातीय लोगों की जमीन हड़पने, वहां के रोजगार पर कब्जा करने के साथ साथ कई तरह की राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में संलिप्त है। यूथ अगेंस्ट करप्शन व अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ताओं ने इस अवसर पर कहा कि वर्तमान केंद्र सरकार व असम की राज्य सरकार इन घटनाओं के आंकड़ों को एकतरफा प्रस्तुत करने का तथा एकतरफा कार्यवाही करने का काम कर रही है। विद्यार्थी परिषद् सरकार की इस नीति का विरोध करती है तथा अविलम्ब बंगलादेशी घुसपैठियों के उपर कार्रवाई की मांग करती है।

पंजाब से मिली सूचना के मुताबिक, जालंधर के विवेकानंद चौक पर बांग्लादेशी घुसपैठ तथा असम में बोड़ो जनजाति पर हमलों के खिलाफ धरना प्रदर्शन का आयोजन स्थानीय अभाविप इकाई ने किया। प्रदर्शन को संबोधित करते हुए परिषद के स्थानीय छात्र नेताओं ने कहा कि आज देश में पांच करोड़ से अधिक बांग्लादेशी आ चुके हैं, जिसके कारण आर्थिक और सामाजिक खतरे उत्पन्न हो गए। छात्र नेताओं ने देश की सुरक्षा को ताक पर रखकर घुसपैठ को संरक्षण देने वाली केंद्र सरकार को असम में हो रही घटनाओं के लिए जिम्मेदार ठहराया।

असम दंगों के विरोध में अमृतसर में भी एक विशाल रोष मार्च का आयोजन किया गया। विद्यार्थी पहले हिंदू कालेज में इकट्ठा हुए। वहां से केंद्र सरकार की बांग्लादेशी घुसपैठियों के समर्थन वाली नीतियों के खिलाफ नारेबाजी करते हुए मोटरसाईकिलों पर सवार होकर हाल बाजार पहुंचे। हाल गेट के बाहर एक रोष रैली का आयोजन किया गया।

उत्तर प्रदेश में भी कार्यकर्ताओं ने सड़कों पर निकल अपना विरोध जताया। गाजीपुर में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की स्थानीय इकाई ने रायगंज से

कर्नाटक में असम हिंसा के विरोध में प्रदर्शन

रैली निकालकर महुआबाग तिराहा पर केंद्र सरकार का पुतला फूंका और असम में हुए हिंसा के विरोध में प्रदर्शन तथा पुतला दहन किया।

पुतला दहन से पूर्व सभा को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि असम में बंग्लादेशी घुसपैठियों द्वारा भारतीयों पर किया गया अत्याचार देश के लिए कलंक है। भारत के युवा वर्ग इसे कतई बर्दाश्त नहीं करेंगे। यह हिंसा रोकी जा सकती थी लेकिन राज्य व केंद्र सरकार ने मिलकर इसे प्रोत्साहित किया। हिंसा की चिंगारी फैलती रही लेकिन सरकार मूकदर्शक बनी रही। असम की हिंसा घुसपैठियों को बढ़ावा देने की एक सोची समझी चाल है। छात्र नेताओं ने चेताया कि हिंसा की पूरी तरह जांच करके बंग्लादेशी घुसपैठियों को सामने नहीं लाया गया तो विद्यार्थी परिषद् उग्र विरोध व आंदोलन की शुरूआत करेगी।

वही वाराणसी में असम में बांग्लादेशियों की घुसपैठ के खिलाफ अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद कार्यकर्ताओं ने पैदल मार्च निकाला। परिषद कार्यकर्ताओं ने बांहों पर काली पट्टी बांधकर काशी विद्यापीठ के मुख्य द्वार से इंग्लिशिया लाइन तक निकले इस मार्च में केंद्र सरकार विरोधी नारे लगाए गए।

इंग्लिशिया लाइन पर हुई सभा में वक्ताओं ने कहा कि असम में लगातार बांग्लादेश से घुसपैठ होती है। घुसपैठिए यहां की नागरिकता भी हासिल कर लेते हैं। असम के कोकराझार में हुई जातीय हिंसा इसी का परिणाम है।

हरियाणा के कुरुक्षेत्र व हिसार के कार्यकर्ताओं ने भी असम में बांग्लादेशी घुसपैठियों द्वारा किए गए नरसंहार के विरोध में जोरदार प्रदर्शन किया। कुरुक्षेत्र के पुराने बस अड्डे के पास एबीवीपी कार्यकर्ताओं ने केंद्र सरकार का पुतला फूंका तथा असम से बांग्लादेशी घुसपैठियों को रोकने की मांग की है। हिसार में भी अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद व यूथ अगेंस्ट करप्शन के कार्यकर्ताओं ने असम में हिसा के विरोध में प्रदर्शन किया। सभा को संबोधित करते हुए प्रदेश मंत्री प्रदीप शेखावत ने कहा कि विद्यार्थी परिषद कई वर्षों से बांग्लादेशी घुसपैठियों के विरोध में आंदोलन चलाए हुए हैं, लेकिन केंद्र सरकार वोट बैंक की राजनीति के कारण कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। कठोर करवाई न होने के कारण आए दिन बांग्लादेशी घुसपैठिए बड़ी वारदातों को अंजाम देते हैं और बेफिक्र यहीं घूमते रहते हैं। छात्र नेताओं ने कहा कि केंद्र सरकार के नकारात्मक रवैये के कारण 8? लोगों की जान चली गई। इसकी पूरी जिम्मेवारी केंद्र सरकार की है।

बिहार के पटना, मुजफ्फरपुर, भागलपुर सहित अनेक स्थानों से असम हिंसा के विरोध में प्रदर्शन का आयोजन किया गया। अनेक स्थानों पर आयोजित विरोध प्रदर्शन को संबोधित करते हुए छात्र वक्ताओं ने कहा कि किशनगंज में जब विद्यार्थी परिषद ने वर्ष 2008 में बांग्लादेशी घुसपैठियों के विरोध में आंदोलन चलाया था, तब संसद में केंद्र सरकार ने खुद माना था कि देश में करोड़ों से बांग्लादेशी नागरिक रह रहे हैं। लेकिन आजतक सरकार घुसपैठियों को भगाने के सम्बन्ध में नहीं कर पाई। छात्र वक्ताओं ने कहा कि केंद्र सरकार असम को भी कश्मीर बनाने पर तुली है।

राजस्थान के बीकानेर, जयपुर, जोधपुर सहित अनेक स्थानों पर परिषद् कार्यकर्ताओं ने अवैध घुसपैठ के खिलाफ विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया तथा मनमोहन सिंह के पुतले फूंके। इस अवसर पर छात्र नेताओं ने कहा कि असम में हिंसा प्रभावित क्षेत्र बंगलादेशी घुसपैठी बाहुल्य हो गया है, जिन्हे लगातार बंगलादेश से सहायता व हथियार मिलते हैं। विद्यार्थी परिषद बंगलादेशी सीमा पर केंद्र सरकार से पर्याप्त सेना तैनात करने की मांग करती है। ■

कोयले के बाद अब क्या लूटेगी मनमोहन सरकार?

■ सुनील आंबेकर

भारत में 2010 में Comman Wealth Games की तैयारी चल रही थी। धीरे-धीरे उसमें ढिलाई एवं देरी की सूचनाएं आने लगी, फिर अव्यवस्थाएं उजागर हुई व अंतत: व्यवस्थाओं को संभालने के नाम पर करोड़ों रूपयों की लूट को पूरा देश देख रहा था। लेकिन फिर भी सब चुप थे कि कैसे तो खेल ठीक से निपटे व देश की प्रतिभा बची रहे। हमें गर्व है कि इतनी बाधाओं के बीच भी हमारे खिलाड़ियों ने अच्छा. प्रदर्शन किया।

परंतु खेल यहां समाप्त नहीं हुआ, फिर उजागर हुआ 70 हजार करोड़ का घोटाला। जैसे यह Comman Wealth नहीं Congress Wealth Games (CWG) का आयोजन था। अनुमानित लागत 1800 करोड़ से बढ़कर 70 हजार करोड़ हुई, फिर भी प्रधानमंत्री ने कहा मुझे पता नहीं था। घोटाले की झड़ी लग गयी। आदर्श सोसायटी घोटाला, 2 जी स्पेक्ट्रम घोटाला, ट्रेटा ट्रक घोटाला आदि। सारे घोटाले सर्वोच्च पदों पर बैठे लोगों के सहभाग से, केंद्रीय मंत्रिमंडल की अनुमति से हुए है। केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC) जैसे पद पर भ्रष्टाचारी व्यक्ति की नियुक्ति जानबूझकर की गयी। जिस समिति में प्रधानमंत्री, गृहमंत्री एवं नेता प्रतिपक्ष (लोकसभा) केवल रहते है और प्रतिपक्ष की नेता खुलकर सत्य बताने के बाद भी प्रधानमंत्री सत्य से बचते रहे, अंतत: न्यायालय के हस्तक्षेप से सत्य उजागर हुआ, फिर भी प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने अपना भोलेपन का नाटक पूरे साहस के साथ जारी रखा।

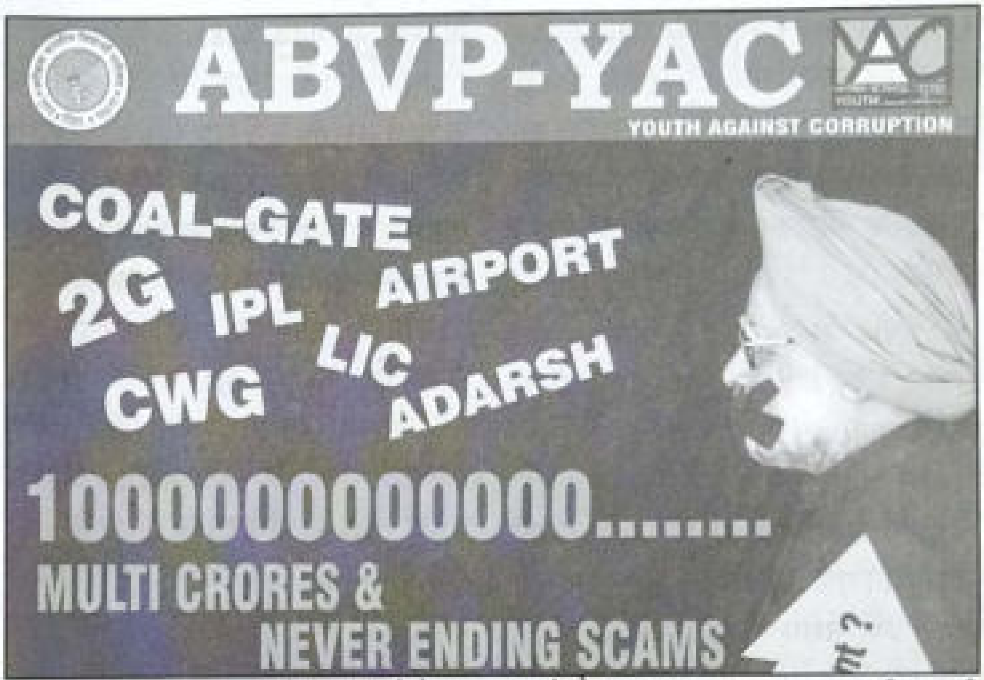

लेकिन कहते है पाप का घड़ा भरता है फूटता भी है। शायद कोयला घोटाले का उजागर होना, यही साबित करता है। लेकिन अभी भी प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह बड़ी बेशर्मी से अपनी प्रामाणिकता का डंका बजा रहे है, त्यागपत्र देने से इंकार कर रहे हैं।

कई दिनों से प्रधानमंत्री के त्यागपत्र हेतु विपक्ष द्वारा हंगामें के कारण संसद का कामकाज नहीं चल पा रहा है। कुछ बुद्धिजीवी तथा सपा एवं वामपंथी दल इसके लिए विपक्ष को दोषी बताकर अपने स्वार्थपूर्त्ति में लगे है।

लेकिन कोयला घोटाला के कई तथ्य जिन्हें नियंत्रक एवं महालेखा परिक्षक (CAG) ने प्रतिवृत्त में उजागर किया है। ज्यों सीधे तौर पर प्रधानमंत्री की ओर इशारा करते है। कुछ तथ्य समझना काफी जरूरी है। जैसे यूपीए-1 में लगभग साढ़े तीन वर्ष से अधिक समय स्वयं डॉ. मनमोहन सिंह कोयला मंत्रालय देखते थे। एक लाख मेगावॉट बिजली उत्पादन के द्वारा 2012 तक सभी को बिजली का लक्ष्य रखकर, उसके नाम पर कोयला खदानों को निजी हाथों में सौंपा गया। सरकारी कंपनी कोल इंडिया लिमिटेड (CIL) का वर्ष 2010-11 का मुनाफा, रूपया 10, 867 करोड़ रहा तथा उसने लगातार बढ़ते हुए इसी वर्ष में 431 मिलियन टन (4310 लाख टन) का उत्पादन किया। यह भारत की सार्वजनिक क्षेत्र की मुनाफा देने वाली तथा व्यावसायिक कुशलता की दृष्टि से भी काफी प्रगत कंपनी है। लेकिन 11 सितंबर 2011 के अपने पत्र में प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने पहली बार प्रस्ताविक खुले स्पर्धात्मक

वितरण प्रणाली (Bidding) का कोयला खान आवंटन में विरोध किया। तथा बाद में पारदर्शिता की राह छोड़कर लगातार 15 अक्टूबर 2004, 11 नवम्बर, 2004 के पत्रों में भी विवेकाधीन अधिकार द्वारा आवंटन का आग्रह करते रहे। 25 जुलाई, 2005 को प्रधानमंत्री कार्यालय ने निर्णय लेते हुए दिनांक 9 अगस्त 2005 से पूर्णत: स्पर्धात्मक आवंटन को अभी तक रद्द रखा।

2004 से कुल 75 कोयला क्षेत्र (ब्लाक) का आवंटन निजी कंपनियों को किया गया। अंतत: 2010 में कोयला विकास अधिनियम बनाया गया व फरवरी 2012 में स्पर्धात्मक आवंटन प्रणाली की घोषणा की गयी। लेकिन इस दौरान सरकारी कंपनी ज्यों सक्षम थी उसने भी 116 क्षेत्र (ब्लाक) मांगे, परंतु उसे बार-बार नकारा गया।

सीएजी द्वारा ज्यों रूपया 1.86 लाख करोड़ का घोटाले का आंकलन किया गया उसमें अभी 75 में से 18 जमीन के नीचेवाली (Underground) खदानें एवं वह खदानें जो सरकारी कंपनी के साथ अनुबंध में है उन्हे छोड़कर यह आकलन बना है, जैसे सीएजी के आकलन के अनुसार संभावित 6285.5 मिलियन टन (अर्थात 62855 लाख टन) में प्रति टन रु. 295.41 का नुकसान के अनुसार राशि रु. 1,85,581.34 लाख करोड़ अर्थात लगभग रु. 1.86 लाख करोड़ का सरकार का नुकसान हुआ। इस आकलन ने प्रधानमंत्री मनमोहन के भोलेपन के मायाजाल को चूर-चूर कर दिया। यह घोटाला भी लगभग 2 जी घोटाले जैसा आवंटन घोटाला है तथा राशि भी लगभग उतनी है। इसने प्रधानमंत्री जैसे गरिमामय पद को भ्रष्टाचार की कतार में खड़ा कर दिया जहां पहले से इनके मंत्रीमंडल के कनीमौझी, कलमाड़ी, ए. राजा जैसे कई नेता उपस्थित है।

अब जहां ऐसे भ्रष्ट सरकार पर टूट पड़ने का समय है। कहीं समाजवादी पार्टी, वामपंथी दल तथा संभावित नया दल (अण्णा के शिष्य) सत्तारूढ़ दल व विपक्ष को एक ही पाले में रखकर सत्तारूढ़ भ्रष्टाचारी सरकार की मदद कर रहे है। यह एक विचारणीय विषय है। क्या विपक्ष के पास सांसदीय मार्ग से ही अपने विरोध को कड़ा करने के अतिरिक्त कोई और उपाय है? नहीं है। फिर प्रश्न खड़ा करने वाले लोग उन्हें चुप रहने के लिये कह रहे है या उस असवैधानिक हिंसक मार्ग के लि रास्ता बना रहे हैं।

ऐसी परिस्थिति में देश के युवाओं को भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन की कमान संभालते हुए उस लड़ाई को तेज करना होगा। पिछले भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन करनेवालों के अंहकारों एवं रणनीतिक गलतियों ने भी इस आंदोलन को नुकसान पहुंचाया है। इसलिए 'यूथ अंगेस्ट करप्शन' के आंदोलन की व्यापक एवं प्रभावी भूमिका समय की मांग है।

शिक्षा (व्यापारीकरण को छूट), जमीन (आदर्श एवं कई), अन्न (महंगाई), खेल, स्पेक्ट्रम, विमानतल जमीन के साथ अब कोयला आदि घोटाले हुए। आगे पान हवा और संभव हुआ तो बादलों के बरसने में भी घोटाला उजागर हो सकता है।

अब समय रहते भ्रष्टाचार की इस गति को रोकना जरूरी है। घोटाले हो जाये और फिर चिल्लाना कब तक? जब चोर खुलेआम घूम रहे हो, तो क्या कोई नयी चोरी होने तक रूक पायेगा? हमें तो ऐसे टोली को तुरंत बेदखल करना, जनता का आक्रोश व्यक्त करना जरूरी है। हां केवल आर्थिक कारणों से नहीं, तो नैतिक तौर पर भी यह हमारे लिये बहुत जरुरी है।

(लेखक अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री है।)

प्रिय मित्रों,

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका के रूप में **'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'** का सितम्बर अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसमें विभिन्न समसामायिक घटनाक्रमों तथा भ्रष्टाचार से संबंधित महत्वपूर्ण आलेखों एवं खबरों का संकलन किया गया है। आशा है कि यह अंक आपकी आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा।

से संबंधित अपने सुझाव और विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई-मेल पर अवश्य भेजें:-

''छात्रशक्ति भवन''

690, भूतल, गली नं. 21, फेज रोड, करोल बाग, नई दिल्ली-110005.

फोन: 011-43098248

ई-मेल: chhatrashakti.abvp@gmail.com

ब्लॉग: chhatrashaktiabvp.blogspot.com

भ्रष्टाचार के खिलाफ सड़क पर उतरे युवा

अभाविप के नेतृत्व में मशाल जुलूस, पुतला दहन और रैली निकालकर जताया केन्द्र सरकार पर आक्रोश

भ्रष्टाचार के खिलाफ अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के देशव्यापी प्रदर्शन के आह्वान पर दिल्ली विश्वविद्यालय के सभी कॉलेजों में छात्र-युवाओं ने हाथों पर काली पट्टी बांध कर विरोध प्रदर्शन किया एवं भ्रष्टाचार के खिलाफ लम्बी लड़ाई का संकल्प लिया। दिल्ली विश्वविद्यालय में हुए इस प्रदर्शन में लगभग 50 कॉलेज के हजारों विद्यार्थियों ने भाग लेकर वर्तमान सरकार के भ्रष्टाचार के खिलाफ अपना विरोध दर्ज कराया।

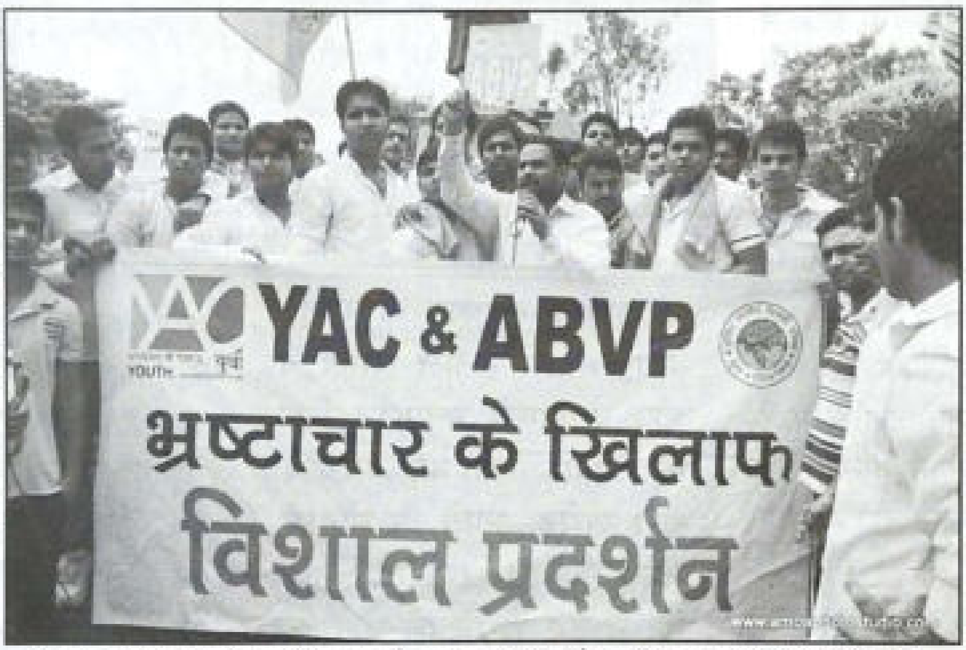

दिल्ली के प्रदर्शन में सम्बोधित करते हुए अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री श्री उमेश दत्त

प्रदर्शन को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय महामंत्री उमेश दत्त ने कहा कि वर्तमान सरकार भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलनों को सरकारी मशीनरियों के दुरुपयोग कर कुचलना चाहती है लेकिन देश का युवा भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाने के लिए अपनी लड़ाई जारी रखेगी।

राजस्थान के भी अनेक स्थानों पर केंद्र सरकार के भ्रष्टाचार के खिलाफ प्रदर्शन के राष्ट्रीय आहवान के तहत युवा सड़क पर उतरे और केन्द्र सरकार के खिलाफ नारे लगाए। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के नेतृत्व में अलग-अलग स्थानों पर रैली निकाली तथा केन्द्रीय वित्त मंत्री पी.चिदंबरम की टू-जी स्पेक्ट्रम घोटाले में भूमिका संदिग्ध होने के कारण मंत्रिपद से हटाने की मांग की। बीकानेर में रैली डूंगर कॉलेज से निकलकर महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय पहुंच जनसभा में तब्दील हो गयी। छात्र नेताओं ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि केन्द्र सरकार भ्रष्ट मंत्रियों को पनाह दे रही है। जिन मंत्रियों पर भ्रष्टाचार के आरोप हैं उनको ऊंचे ओहदे दिए जा रहे हैं। विद्यार्थी परिषद् केंद्र की भ्रष्ट नीति का हर स्तर पर विरोध करेगी तथा जब तक भ्रष्ट मंत्रियों पर कार्रवाई और भ्रष्टाचार मिटाने के लिए ठोस कदम नहीं उठाए जाते, अभाविप कार्यकर्ता

राष्ट्रीय महामंत्री उमेश दत्त ने कहा कि वर्तमान सरकार भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलनों को सरकारी मशीनरियों के दुरुपयोग कर कुचलना चाहती है लेकिन देश का युवा भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाने के लिए अपनी लड़ाई जारी रखेगा।

प्रदर्शन जारी रखेंगे।

महाराष्ट्र , विदर्भ प्रान्त के कई केन्द्रों पर भ्रष्टाचार के विरोध में छात्रों ने आन्दोलन तथा प्रदर्शन आयोजित किये। मुंबई, पुणे सहित अनेक स्थानों पर भ्रष्टाचार विरोधी प्रदर्शन किये गये।

उत्तराखंड के देहरादून, हरिद्वार, नैनीताल, कुमायूं, लोहाघाट सहित अनेक स्थानों पर केंद्र के भ्रष्टाचार के विरोध में विद्यार्थी परिषद ने भी मोर्चा खोल दिया है। विद्यार्थी परिषद् के नेतृत्व में छात्रों ने लोहाघाट में नगर के मुख्य मार्गो व चानमारी, मीनाबाजार होते हुए बाइक रैली के साथ तिरंगा यात्रा निकाली जिसमें सैंकड़ों छात्र शामिल हुए। तिरंगा यात्रा के समापन मौके पर आयोजित सभा में अभाविप के छात्र नेताओं ने कहा कि 15 अगस्त को प्रधानमंत्री लाल किले से झंडा फहराने से पूर्व अपने मंत्रिमंडल के पंद्रह दागी मंत्रियों को बर्खास्त करें, अन्यथा वह तिरंगा फहराने के अधिकारी नहीं हैं। छात्र नेताओं ने प्रधानमंत्री पर देश की जनता को गुमराह करने का आरोप लगाते हुए कहा कि भ्रष्टाचार, मंहगाई व बढ़ती बेरोजगारी को नियंत्रित करने में केन्द्र सरकार फेल हो गई है। इस दौरान वक्ताओं ने कालेधन की वापसी व भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों को सजा न होने तक अभाविप की मुहिम जारी रखने के संकल्प को भी दुहराया।

हरियाणा प्रान्त के अनेक स्थानों पर अभाविप व यूथ अगेंस्ट करप्शन के कार्यकर्ताओं ने भ्रष्टाचार के विरुद्ध आहूत इस देशव्यापी प्रदर्शन में हिस्सा लिया। रोहतक के स्थानीय पावर हाउस चौक पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद व यूथ अगेंस्ट करप्शन के कार्यकर्ताओं ने भ्रष्टाचार के खिलाफ प्रदर्शन किया। प्रदर्शन को संबोधित करते हुए प्रदेश मंत्री प्रदीप शेखावत ने कहा कि प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार द्वारा करोड़ों रुपये के घोटाले किए गए हैं। पूर्व दूर संचार मंत्री ए. राजा का 2जी घोटाला, आदर्श सोसाईटी घोटाला, हसन अली प्रकरण व कई अन्य घोटाले है जिनसे देश को हजारों करोड़ रुपये की आर्थिक क्षति हुई है। अन्य वक्ताओं ने वर्तमान सरकार को विदेशों में जमा काले धन को वापिस भारत में लाने को असमर्थ बताते हुए कहा कि वर्तमान केंद्र सरकार ने अपने कार्यकाल में केवल भ्रष्टाचार का ही ग्रंथ लिखा है। इन सब घोटालों को देखते हुए प्रधानमंत्री को 15 अगस्त के दिन झंडा फहराने का नैतिक अधिकार नहीं है।

बिहार प्रान्त के भी अनेक स्थानों से

कर्नाटक में भ्रष्टाचार के विरोध में प्रदर्शन कर रहे कार्यकर्ता

यूथ अगेंस्ट करप्शन के राष्ट्रीय संयोजक श्री सुनील बंसल ने कहा प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार द्वारा करोड़ों रुपये के घोटाले किए गए हैं। अभी तक कई घोटाले हुए हैं जिनसे देश को हजारों करोड़ रुपये की आर्थिक क्षति हुई है। वर्तमान सरकार विदेशों में जमा काला धन वापिस भारत में लाने में असमर्थ है। इस केंद्र सरकार ने अपने कार्यकाल में केवल भ्रष्टाचार का ही ग्रंथ लिखा है। इन सब घोटालों को देखते हुए प्रधानमंत्री को 15 अगस्त के दिन झंडा फहराने का नैतिक अधिकार नहीं है।

भ्रष्टाचार के विरोध में प्रदर्शन कर रहे कार्यकर्त्ता

भ्रष्टाचार के खिलाफ़ आयोजित राष्ट्रव्यापी प्रदर्शन की खबरें आयी है। पटना, भागलपुर, मुजफ्फरपुर, सुपौल, नवादा, अररिया सहित अनेक जिला केन्द्रों पर भ्रष्ट केंद्र सरकार के नीतियों के खिलाफ प्रदर्शन किये गये तथा पुतला दहन का कार्यक्रम हुआ। अररिया में हुए एक कार्यक्रम में वर्तमान सप्रंग सरकार को सिर से पांव तक भ्रष्टाचार में डूबी रहने का आरोप लगाते हुए यूथ अंगेस्ट करप्शन और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं व युवाओं ने प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के अवसर पर आयोजित सभा को संबोधित करते हुए प्रदेश मंत्री प्रवीण कुमार ने कहा कि केन्द्र की संप्रग सरकार सिर से पांव तक भ्रष्टाचार में डूबी है जिसे किसी को यह मानने में कोई गुरेज नहीं होना चाहिए कि यूपीए सरकार घोटाले की सरकार है।

वाराणसी, मेरठ, गाजियाबाद, कानपुर, झाँसी, लखनऊ सहित उत्तर प्रदेश के विभिन्न स्थानों से भी प्रदर्शन की सूचना मिली है। काशी में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकताओं ने बीएचयू स्थित लंका गेट और महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के गेट नंबर एक के पास केंद्र सरकार का पुतला फूंक अपना विरोध जताया और केंद्र सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। विद्यापीठ के पास पुलिस ने पुतला छीनने का प्रयास किया लेकिन कार्यकर्ता पुतला फूंकने में सफल रहे। इस दौरान कार्यकर्ताओं व पुलिस के बीच नोक-झोंक भी हुई। इस अवसर पर कार्यकर्ताओं ने कहा कि वर्तमान केंद्र सरकार के कार्यकाल में एक से बढ़कर एक घोटाले हो रहे हैं और सरकार चुप्पी साधे हुए है।

जम्मू कश्मीर के कठुआ, जम्मू महानगर, श्रीनगर सहित अनेक स्थानों पर परिषद् कार्यकर्ताओं ने केंद्र सरकार के भ्रष्टाचार के खिलाफ प्रदर्शन किया तथा पुतला दहन किया। कठुआ से मिली जानकारी के अनुसार, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद व यूथ अगेंस्ट करप्शन के नेतृत्व में भ्रष्टाचार के विरोध में मोटरसाईकिल रैली का आयोजन किया गया। इस दौरान रैली में शामिल दर्जनों युवाओं ने शहर में घूमकर भ्रष्टाचार के विरोध में जोरदार नारेबाजी की।

रैली का नेतृत्व कर रहे अभाविप के छात्र नेताओं ने कहा कि भारत को आजाद हुए 65 वर्ष हो चुके हैं, लेकिन देश में फैले भ्रष्टाचार के कारण आज आम नागरिक गुलामी का जीवन जीने को मजबूर है। भ्रष्टाचार के कारण ही अपने प्राणों की आहुति देकर देश को आजाद कराने वाले शहीदों द्वारा भारत में सुशासन का देखा गया सपना साकार नहीं हो सका है। अभाविप ने भ्रष्टाचार के खिलाफ लोगों को जागरूक करने के लिए मुहिम शुरू की है, जो भ्रष्टाचार के समूल नाश से पूर्व नहीं रुकने वाली है।

भ्रष्टाचार के खिलाफ अभाविप की रैली, पुतला दहन का कार्यक्रम मध्य प्रदेश के इंदौर, भोपाल, उज्जैन, रीवा सहित अनेक स्थानों पर प्रदर्शन आयोजित किये गये। इंदौर में भ्रष्टाचार को लेकर सरकार के ढुलमुल रवैये के विरोध में हाथों में भ्रष्टाचार विरोधी तख्तियां लिए चल रहे छात्रों और कार्यकर्ताओं ने भ्रष्टाचार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। बारिश की फुहारों के बीच सैकड़ों कार्यकर्ता कलेक्टर कार्यालय रैली की शक्ल में पहुंचे तथा भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए कड़े कदम उठाने की मांग की। ■

शैक्षणिक समस्यायों को लेकर विश्वविद्यालय का घेराव

मेरठ विश्वविद्यालय में व्याप्त शैक्षणिक समस्यायों को लेकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने विश्वविद्यालय का घेराव किया। पूर्व घोषित कार्यक्रम के तहत 9 जिलों के कायकर्ता 23 अगस्त को बड़ी संख्या में सर छोटू राम इंजीनियरिंग कॉलेज के गेट पर एकत्र होकर जुलूस की शक्ल लिए विश्वविद्यालय पहुंचे। विश्वविद्यालय पहुंचकर छात्र अपनी मांगो के समर्थन में धरने पर बैठ गए। धरने के दौरान कुलपति से मिल अपनी मांग पत्र सौंपने की कोशिश में चीफ प्रोक्टर से कार्यकर्ताओं की काफी नोक-झोंक भी हुई। बाद में विद्यार्थी परिषद् के नेतृत्व में छात्रों का एक प्रतिनिधिमंडल कुलपति से मिलकर अपनी मांगों से सम्बंधित ज्ञापन सौपा।

कुलपति से हुई वार्ता के दौरान सह प्रान्त संगठन मंत्री नितेश तोमर ने कुलपति के समक्ष छात्रों से जुड़ी सभी समस्याओं को बिन्दुवार बताया तथा उनके अविलम्ब समाधान की मांग की। जिसके बाद परिषद् के दबाब में जिन प्रमुख मांगों को कुलपति ने माना उनमें अंक प्रमाण पत्र सहित अन्य डिग्री उपलब्ध करवाने हेतु अलग काउंटर की व्यवस्था करवाना, छात्र संघ चुनाव 42 दिन की अवधी में करवाना, सत्र नियमित 25 अगस्त तक करना तथा बीसीए, बीबीए, का परीक्षा परिणाम जारी करना शामिल है।

इससे पहले धरने को संबोधित करते हुए छात्र नेता अंकुर राणा ने कहा कि छात्र विश्वविद्यालय में दर दर भटक रहे है लेकिन उनकी समस्या को सुनने वाला कोई नहीं है। प्रान्त संगठन मंत्री सुनील वार्ष्णेय ने कहा कि मेरिट लिस्ट तैयार करने ध्यान नहीं दिया गया जिसकी वजह से इसमें अनेक गड़बड़िया है। जिसको दूर किया जाये। साथ ही उन्होंने नामांकन के ठेके में लाखों के घोटाले की अविलम्ब जाँच की मांग करते हुए कहा कि जाँच करने के बाद जाँच की रिपोर्ट वेबसाइट पर डाला जाये। प्रदर्शन में गाँव देहात में स्थित महाविद्यालयों के भी अनेक छात्र सम्मिलित हुए। ■

राष्ट्रीय संगठन मंत्री ने की अण्डमान द्वीप समूह की यात्रा

राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री सुनील आंबेकर द्वारा 24, 25, 26 अगस्त 2012 को अंडमान द्वीप समूह (पोर्ट ब्लेयर) का प्रवास किया गया। इसमें प्रमुख रूप से स्वामी विवेकानन्द स्वाध्याय मंडल का उद्घाटन, निकोबारी जनजाति छात्रों के साथ एकत्रीकरण, सेल्युलर जेल जाकर शहीदों को श्रद्धांजलि तथा शिक्षा सचिव से मिलना आदि कार्यक्रम रहे। अंडमान द्वीप समूह की इकाई ने इस दौरान यह दर्शाया कि सुदूर द्वीप समूह में भी देशभक्ति और सामाजिक संवेदना की मशाल अभाविप ने प्रज्ज्वलित रखी है। इस प्रवास में प्रा. कंडिमुत्तु और अंडमान द्वीप समूह इकाई के मंत्री ज्ञानेश्वर राम पूरे समय साथ रहे। ■

संस्मरण

प्रा. बालासाहब आपटे और मैं

■ मदनदास देवी

बाल आपटे और मेरा परिचय 1964 जून से है, 1964 जून में महाराष्ट्र प्रदेश का अभ्यास वर्ग हुआ था उसमें आपटे जी कार्यक्रम प्रमुख थे व मैं नियंत्रक था। सभी विद्यार्थी परिषद कार्यकर्ताओं को कार्यक्रम प्रमुख व नियंत्रक का अर्थ समझ में आता है। विषय तय होने पर उसे लिखना, उस वक्त रोटेटिंग मशीन होती थी, उस पर कापी निकालते थे। दिन में नींद आया करती थी, परंतु कार्यक्रम प्रमुख व नियंत्रक होने के नाते फिर भी काम करना पड़ता था।

उस समय बाल आपटे मुंबई नगर के संगठन मंत्री थे। उनके स्थान पर मैं संगठन मंत्री और सुरेश साठे मंत्री ऐसा परिवर्तन हुआ। तब हर महीने नगर परिषद हुआ करती थी, उसमें 100 से ज्यादा छात्र रहते थे, उसका मुख्य कारण उनमें से कई लोगों को व्यक्तिगत रूप से मिलना (कॉलेज व घर जाकर मिलना) होता था। इस काम में बाल आपटे को बहुत ही उत्साह था। नगर परिषद में मुख्य भाषण भी बाल आपटे का रहा करता था, वह आकर्षण भी सब के मन में रहा करता था। हम कार्यकर्ताओं की 'पीठला भात' (कढ़ी और चावल) टोली हुआ करती थी। तदंतर किसी के घर में माताजी/भाभीजी नहीं होती थी ऐसे घर में जाते थे तथा 'पीठला भात' बनाना, सबने भोजन करना और हंसी मंजाक में कब समय जाता था पता ही नहीं चलता था। आपटे जी के घर में भी कई बार जाना होता था, क्योंकि उनके घर में बड़े भाई-भाभी व छोटा भाई राम रहा करता था, वहां उनके घर में ऐसे प्रसंग आया करते थे।

आपटे जी हाईकोर्ट में जाया करते थे वहां उनका परफॉर्मेंस अच्छी प्रकार हो रहा था। परंतु विद्यार्थी परिषद के काम व कार्यक्रम के लिए दोपहर 12.30 या 1.00 बजे कोर्ट में पहला सेशन होने के बाद आपटे जी, मैं और श्रीकांत धारप तुरंत बाहर निकलते थे, विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं को मिलने के लिए, कार्यक्रम के लिए और कभी कभी सिनेमा के लिए। उसी वर्ष पद्मनाभ आचार्य, दिलीप परांजपे पूर्वांचल में अरुण साठे को मिलने गये थे, अरुण साठे वहां संघ प्रचारक थे। आते समय उन्होंने सील (SEIL) प्रकल्प की योजना बनाई - SEIL और वहां से 80 विद्यार्थी मुंबई लाने की कल्पना लेकर मुंबई आये। उसके बाद मुंबई की बैठक में यशवंतराव व अन्य सभी कार्यकर्ताओं ने मिलकर इस योजना को स्वीकार किया और इस योजना को अच्छी प्रकार से सफल बनाना यह तय किया। कोलाबा से लेकर ठाणे तक इतने बड़े क्षेत्र में 80 घर खोजने का कार्य रिकार्ड समय में पूरा किया व विद्यार्थी आने के पहले ही सभी मेजबान (Host) उनके स्वागत हेतु स्टेशन पहुंच चुके थे। ऐसे अनेक उपक्रम हुआ करते थे, जिसमें बाल आपटे तथा अन्य कार्यकर्ता मिलकर इन योजनाओं में भाग लेते थे।

बाल आपटे के वैशिष्टय था अत्यंत अनौपचारिक मित्रता और देर रात तक बाहर रहना, जिसमें पोस्टर लगाना आदि काम हुआ करते थे। उन दिनों पोस्टर लगाने का कॉन्ट्रेक्ट देने के पद्धति नहीं थी, पोस्टर हाथ से दीवार पर सीढ़ी लगाकर लगाने की पद्धति थी। उसमें सब कार्यकर्ता भाग लेते थे।

1965 में Defence Oriented 13th All India Conference उसमें सब मिलाकर देशभर से 400 कार्यकर्ता उपस्थित थे। उसका उद्घाटन करने के लिए जनरल

थोरात आये थे। तथा मलेशिया के एम्बेसेडर जेतुल बिन इब्राहिम उपस्थित थे। उस अधिवेशन में भी मैं नियंत्रक और आपटे जी कार्यक्रम प्रमुख थे। उस अधिवेशन में भी रात तक देरी से सोने का रिवाज होने के कारण हम सुबह देरी से उठे, तथा व्यायाम का समय हो गया तो हम दोनों बिना मुंह धोये तुरंत मैदान में भागे और व्यायाम समय पर हुआ। ऐसे बहुत से प्रसंग हुआ करते थे। उस वर्ष बाल आपटे All India Secretary बने।

1966 में कानपुर में अधिवेशन हुआ, उसमें जनरल करियप्पा मुख्य अतिथि थे। उस समय SEIL की Tour पूर्वांचल में गयी थी, वो उसमें वापस आये थे। उसी समय (उसी काल में) विद्यार्थी परिषद का वैचारिक कार्यक्रम शुरू हुआ। ''विद्यार्थी कल का नहीं आज का नागरिक हैं'' यह बात रखना प्रारंभ हुआ। केवल Campus के नहीं तो बाहर के प्रश्न भी विद्यार्थियों के है, क्योंकि विद्यार्थी उनको भोगता है। ऐसे विचार पत्र यशवंत राव जी के विचार विमर्श से आपटे जी ने लिखना शुरू कर दिया। इसी में से विद्यार्थियों की सहभागात्मक भूमिका यह विषय आपटे जी ने अपने भाषण में रखा। उसी विषय पर 17 गटों में संविमर्श (सेमीनार) मुंबई के प्रांत अधिवेशन में हुआ। आपटे जी का वैशिष्ट्य था किसी विषय को विचार के रुप में समझने के बाद (जिसको मराठी में कहते है एक टाकी) लिखना शुरू कर दिया तो आखिरी तक लिखते थे जिसे बदलने का कारण नहीं पड़ता था। उसी में से ''सहभागात्मक भूमिका'' ऐसा शीर्षक वाला पत्र तैयार हो गया।

1969-70 में त्रिवेंद्रम में राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ जिसमें मैं अखिल भारतीय संगठन मंत्री बना। मुझे संगठन मंत्री बनाये रखने में और उस प्रकार से मेरी भूमिका रहे, इन सभी विषयों में यशवंतराव जी व बाल आपटे इनकी महत्व की भूमिका रही। महीना डेढ़ महीना प्रवास करने के बाद मुंबई में आना। आकर उनसे मिलना और कुछ नहीं चार दिन शांत रहना, ऐसी उनकी सलाह के कारण पूर्णकालिक कार्यकर्ता के नाते Freshness हमेशा, आज भी निकला हूं ऐसी स्थिति बनी रही।

विद्यार्थी परिषद की विचारधारा को आगे बढ़ाने व दूरदर्शी सोच का कार्य भी आपटे जी के मार्गदर्शन से प्रारंभ हुआ। जिसमें विचार बैठकों के माध्यम से विद्यार्थी परिषद के पिछले कार्यों की समीक्षा के साथ आगामी वर्षों की कार्य योजना बनाकर काम किया जाये ऐसा विचार यशवंतराव जी व आपटे जी ने सभी कार्यकर्ताओं के समक्ष रखा। विचार बैठक के विषय व बैठक में चर्चा चलाने का कार्य आपटे जी बहुत प्रभावी तरीके से करते थे जिससे विद्यार्थी परिषद की विशिष्ट कार्य पद्धति विकसित होती गई। विचार बैठकों का क्रम निरंतर जारी रहा जिससे विद्यार्थी परिषद ने यह मत रखा कि छात्रशक्ति-राष्ट्रशक्ति है। तथा उस समय समाज के मानस पटल में यह सोच बदलने का कार्य किया कि Student Power is Nation's Power. इसके पश्चात् गुजरात व बिहार में नवनिर्माण आंदोलन के दौरान यह साबित करके भी दिखाया कि देशहित से जुड़ा हर विषय छात्रों से भी जुड़ा है चाहे वह शैक्षिक परिसरों में हो या सामाजिक क्षेत्र में हो। आपटे जी ने इन सभी कार्यों में अग्रणी रहकर कार्यकर्ताओं को हमेशा प्रामाणिकता से कार्य करने हेतु प्रेरित किया।

मेरे Law के कुछ Subject रूके हुए थे, परंतु प्रचारक निकलना है तो जो पढ़ाई मैं कर रहा हूं वह पूर्ण होनी चाहिये, इसलिए Law के पेपर दिये थे। उस समय आपटे जी Examiner of Law, Bom[bay] University थे और मेरा उनका रोज का मिलना होता था। मैं परीक्षा में बैठा हूं यह बात वे जानते थे। परंतु उन्होंने कभी मेरा नम्बर जानने की कोशिश नहीं की, और मैंने भी मेरा नम्बर बताना अच्छा नहीं माना। Examination के परिणाम आने पर ही उनको वे नम्बर और परीक्षाफल मालूम हो गया था। ऐसा था उनका व्यक्तित्व। अपने मित्रों के बारे में ये बात एक उदाहरण के रूप में मैं और वे बताते थे। Chief Examiner होने के बाद भी कितनी प्रामाणिकता बरतने का उनका स्वभाव था।

बिहार में और गुजरात में छात्रों का मंहगाई व भ्रष्टाचार के विरूद्ध आंदोलन शुरू हुआ। उसमें विद्यार्थी परिषद का अ. भा. अधिवेशन अहमदाबाद में था। उसमें प्रस्ताव पारित किया गया कि ''विद्यार्थी कल का नहीं आज का नागरिक है'' विद्यार्थियों की सामाजिक, राष्ट्रीय, आर्थिक विषयों में सहभागात्मक भूमिका है। इस कारण Vidhyarthi will take part in the Agitation इसलिए विद्यार्थी परिषद ने इस आंदोलन को Lead किया और इस कारण गुजरात में चिमणभाई की सरकार गिरी और बाबुभाई की सरकार आयी। उतने में केंद्र में इंदिरा गांधी ने चुनाव में गलत Practice

(शेष पृष्ठ 32 पर)

प्रतिभा को सम्मान

अपनी रचनात्मक गतिविधियों से छात्रों को प्रेरित, प्रोत्साहित करनेवाली अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के देश भर की कई इकाईयों ने मेधावी छात्रों के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित किये।

अखिल भारितीय विद्यार्थी परिषद के उदेश्य से आयोजित इस कार्यकम को शिक्षा सेवा सोसायटी के सौजन्य से आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए विद्यार्थी परिषद के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष पंकज महाजन ने कहा कि 63 वर्षों से छात्र शक्ति को रचनात्मक दृष्टिकोण प्रदान करने हेतु विद्यार्थी परिषद लगातार शैक्षणिक परिसरों में कार्य कर रही है। देश से जुड़ी प्रत्येक समस्या को अपनी समस्या मानकर, उसके समाधान को तत्पर युवाओं की टोली तैयार करने में परिषद लगातार लगी है । लगभग

गढ़वा (झारखण्ड) के प्रतिभा सम्मान समारोह में छात्र को सम्मानित करते हुए सांसद श्री इन्दर सिंह नामधारी।

जालंधर, पंजाब इकाई द्वारा 20 शैक्षणिक संस्थानों के 400 छात्रों को सम्मानित किया। 31 जुलाई को स्थानीय रेड क्रास भवन में आयोजित सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर राज्य सभा सांसद अविनाश राय खन्ना उपस्थित थे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता अध्यक्ष, छात्र कल्याण पंजाब टेक्नीकल युनिवर्सिटी ने किया।

शिक्षा के क्षेत्र में उम्दा प्रदर्शन करने वाले प्रतिभावान छात्रों को सम्मानित करने

''देश से जुड़ी प्रत्येक समस्या को अपनी समस्या मानकर, उसके समाधान को तत्पर युवाओं की टोली तैयार करने में परिषद लगातार लगी है । लगभग 18 लाख की सदस्यता वाला संगठन न केवल छात्र हितों के लिए अपनी आवाज बुलंद करता है बल्कि उनके हितों के लिए सदैव तत्पर भी रहता है।''

18 लाख की सदस्यता वाला संगठन न केवल छात्र हितों के लिए अपनी आवाज बुलंद करता है बल्कि उनके हितों के लिए सदैव तत्पर भी रहता है। योग्य प्रतिभा को सम्मान मिले, उन्हें जीवन में आगे बढ़ने और देशहित में कार्य करने की प्रेरणा मिले इस उदेश्यों की पूर्ति हेतु आज का कार्यक्रम आयोजित किया गया है।

मुख्य अतिथि अविनाश राय खन्ना ने विद्यार्थी परिषद में कार्य करने के अपने समय को याद करते हुए कहा कि ऐसे

मुख्य वक्ता व अभाविप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्रीनिवास ने विद्यार्थियों को देश की आवाज बताते हुए कहा कि देश में व्याप्त चुनौतियों के समाधान हेतु छात्रों को अपनी प्रभावी भूमिका सुनिश्चित करनी चाहिए तभी गौरवशाली भारत के अतीत को दुबारा वापिस पाया जा सकेगा।

आयोजन छात्रों में नए जोश और उत्साह का संचार करते है। छात्रों के सम्मान में ऐसे आयोजन प्रत्येक वर्ष आयोजित होते रहने चाहिए। श्री खन्ना ने अपनी तरफ से सहयोग का भी भरोसा दिलाया।

शिक्षा सेवा सोसायटी के कमलजीत सिंह ने सोसायटी के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सोसायटी जरूरतमंद छात्रों की मदद के लिए सदैव तैयार रहता है तथा समय समय पर जरुरी अध्ययन सामग्री उपलब्ध करवाने के साथ साथ गोष्ठी, व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रम भी आयोजित करता है। उन्होंने ऐसे आयोजन के लिए विद्यार्थी परिषद का आभार भी व्यक्त किया। कार्यकम का संचालन जिला संयोजक वरुण कश्यप ने किया।

झारखण्ड के गढ़वा इकाई के द्वारा 15 जुलाई को संपन्न प्रतिभा खोज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें जिले भर के हजारों परीक्षार्थी शामिल हुए। प्रतियोगिता के तीस सफल प्रतिभागियों का चयन किया गया तथा सभी चयनित प्रतिभागियों को दो सितंबर को टाउन हाल में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कृत किया गया।

अभाविप चंडीगढ़ इकाई ने पंजाब विश्वविद्यालय के छह सौ टॉपर छात्रों को छह अगस्त को एक कार्यक्रम का आयोजन कर उन्हें सम्मानित किया। विदित हो कि चंडीगढ़ इकाई मेधावी प्रतिभाओं के सम्मान में पिछले पांच वर्षो से कार्यक्रम का आयोजन कर रही है।

पंजाब विश्वविद्यालय के विधी विभाग के सभागार में हुए इस समारोह की अध्यक्षता ध्यान चंद अवार्डी पूर्व ओलंपियन कुलदीप मलिक ने किया जबकि पंजाब के कैबिनेट मंत्री मदन मोहन मित्तल बतौर मुख्य अतिथि व पंजाब एससी कमीशन के अध्यक्ष राजेश विशिष्ट अतिथि के तौर पर कार्यक्रम में शामिल हुए। इस अवसर पर छात्रों को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि व पंजाब के कैबिनेट मंत्री मदन मोहन मित्तल ने कहा कि टॉपर तो विश्वविद्यालय कि शान होते है। हमें आप पर गर्व है। श्री मित्तल ने सम्मानित छात्रों को मजबूत और स्वाभिमानी भारत के निर्माण में अपने योगदान देने का आह्वान किया। मुख्य वक्ता व अभाविप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्रीनिवास ने विद्यार्थियों को देश अभाविप की आवाज बताते हुए कहा कि देश में व्याप्त चुनौतियों के समाधान हेतु छात्रों को अपनी प्रभावी भूमिका सुनिश्चित करनी चाहिए तभी गौरवशाली भारत के अतीत को दुबारा वापिस पाया जा सकेगा।

इससे पहले कार्यकम में सम्मानित करने के लिए विद्यार्थी परिषद के प्रत्येक विभाग के मेधावी छात्रों की सूची तैयार की गई। इसके साथ ही कार्यक्रम में पंजाब विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेलों में प्रतिनिधित्व करने ... खिलाड़ियों को भी पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में चंडीगढ़ अध्यक्ष श्री राजीव सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थि थे।

मेरठ के मोदीपुरम स्थित राजमंदिर मंडप में 24 अगस्त को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया। सम्मान समारोह में चंचल चौहान, पूजा शर्मा, अक्षय सिंघल, देवेंद्र कुमार, अर्जुन चौहान व हीना अंसारी समेत अनेक छात्र-छात्राओं को मेडल, प्रमाणपत्र शील्ड व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इनमें दयावती मोदी एकडेमी, डीएमजी डौरली, नेताजी सुभाष इंटर कालेज, ज्ञान भारती इंटर कालेज, सफल इंटर कालेज व किसान इंटर कालेज के छात्र-छात्राएं शामिल रहे।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व सांसद अशोक प्रधान ने कहा कि देश में जो विकास हुआ है उसमे छात्रों की बड़ी भूमिका रही। कार्यक्रम को भारतीय जनता मजदूर महासंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुनील भराला, अभाविप के प्रदेश मंत्री अंकुर राणा, महापौर हरिकांत अहलूवालिया व देवपाल सिंह ने भी संबोधित किया। अध्यक्षता पूर्व विधायक अमित अग्रवाल व संचालन एमडी जोशी ने किया। ■

बाजारवाद के दौर में हिन्दी भाषा का बदलता स्वरूप

■ डॉ. राजनारायण शुक्ला

भाषा न केवल व्यक्ति की वरन् राष्ट्र की सबसे बड़ी पहचान है। किसी भी राष्ट्र के लिये जितना बड़ा महत्त्व राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय गीत, राष्ट्रीय संविधान का होता है, उतना ही महत्त्व राष्ट्रीय भाषा का भी होता है । प्रत्येक स्वतन्त्र व सम्प्रभु राष्ट्र की अपनी एक भाषा होती है 'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल' का अभिप्रेत यही है कि किसी देश की अपनी भाषा उस देश की ऐतिहासिक विरासतों को सांस्कृतिक आयामों के रूप में व्यक्त करती है। जर्मनी से लेकर पौलेण्ड तक अनेक यूरोपीय देशों का निर्माण भाषिक पहचान के आधार पर ही हुआ है। हमारा देश भारत इस अर्थ में सौभाग्यशाली है कि पूरे संसार की प्राचीनतम सभ्यताओं की स्थली के रूप में इसकी अपनी खास पहचान है, अपनी एक खास सामासिक संस्कृति है और अनेकता में एकता इस देश का प्राणतत्त्व है।

हमारे यहां अनेक भाषा-भाषी निवास करते हैं। यहां लगभग 130 भाषाएं और 368 बोलियां जीवित और जाग्रत हैं, जिनमें हिन्दी का स्थान प्रमुख और महत्त्वपूर्ण है। हालांकि यह भी उतना ही सत्य है कि क्षेत्रीय भाषाओं की भी अपनी महत्ता है।

भारत में प्रारम्भ से ही मध्यदेश की भाषाएं-संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि अपने अपने काल में राष्ट्रभाषाएं रहीं। अतः मध्यदेश की प्रमुख भाषा होने के कारण हिन्दी इनकी सहज उत्तराधिकारिणी हुई। आठवीं शती में सिद्धों ने इसे स्वरूप देने की कोशिश की और दसवीं शती में अमीर खुसरो ने इसको जन व्यवहार की चेतना प्रदान की। उसके पश्चात् कबीर, नानक, तुलसी, सूर, मीरा, रहीम, रसखान, देव, पद्माकर, घनानन्द, बिहारी से लेकर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तक अजस्र धारा के रूप में हिन्दी गंगा के समान प्रवाहमान रही है। प्रायः यह माना जाता है कि वर्तमान हिन्दी, जिसे हम खड़ी बोली कहते हैं उसका प्रारम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के युग से हुआ। प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी, प्रेमचन्द, दिनकर, मैथिलीशरण गुप्त, बच्चन जैसे सैकड़ों साहित्यकारों ने इसे गरिमा प्रदान की और इससे भी बड़ी बात यह है कि बोलचाल और जनसम्पर्क के लिये कन्याकुमारी से लेकर काश्मीर तक हिन्दी का व्यवहार किया जाता है।

शंकर दयाल सिंह स्पष्टतः स्वीकारते हैं कि ''राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को प्रतिष्ठित करने का श्रेय पूर्णतया महात्मा गांधी को है, जिन्होंने राष्ट्रीय संघर्ष के साथ इसे जोड़ा। यों उनके पहले स्वामी दयानन्द सरस्वती से लेकर राजाराम मोहन राय, केशवचन्द सेन और महामना मदन मोहन मालवीय जी ने इसे सर्वव्यापक बनाने की दिशा में काफी प्रयास किया था।''

हमारे संविधान निर्माताओं ने भी गंभीर चिन्तन-मन्थन के बाद एकता की सक्षम, सुदृढ़ वाहिका हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा के साथ-साथ राजभाषा बनाने का निर्णय लिया था और आज यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि हिन्दी ने राष्ट्रभाषा, राजभाषा, जनभाषा, सम्पर्क भाषा आदि सभी रूपों में अपनी अलग पहचान बनाई है। भारत में ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में भी हिन्दी की गूंज सुनाई दे रही है। आज विश्व में सर्वाधिक प्रयोग की जाने वाली भाषाओं में हिन्दी का दूसरा स्थान है।

आधुनिक संदर्भ में महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आज हिन्दी भाषा का स्वरूप व प्रवृत्ति बदल रही है। इसका मुख्य कारण यह है कि भूमण्डलीकरण, आर्थिक उदारीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी, मीडिया और तकनीकी क्रान्ति के युग ने सम्पूर्ण विश्व को एक बाजार बना दिया है, जिसके प्रभाव से भाषा भी अछूती नहीं रही है। आज भारत की महत्ता इसलिये भी अधिक है क्योंकि यह विश्व के दस नये उभरते हुए बड़े बाजारों में एक है। अतः यहां की भाषा भी वैश्विक मानचित्र पर एक सम्भावनाशील, महत्त्वपूर्ण और बड़ी भाषा बनकर शान से

उभरी है। जाहिर है जिसका स्थान इतना महत्वपूर्ण हो उसकी उपेक्षा न तो मांगपूर्ति के नियमों पर आधारित कोई बाजार कर सकता है और न सम्प्रेषण को केन्द्र बिन्दु मानने वाला मीडिया ही कर सकता है। पर यहाँ प्रासंगिक प्रश्न यह है कि हिन्दी ने बाजार को और बाजार ने हिन्दी को कितना प्रभावित किया है वस्तुत: भाषा और बाजार परस्पर एक दूसरे से सम्बन्धित होते हैं। अजय तिवारी का तो यही मानना है कि ''भाषा के निर्माण और प्रसार में बाजार की प्रत्यक्ष भूमिका होती है। आगरा के राजधानी रहने पर ब्रजभाषा का सांस्कृतिक व्यवहार में दूर-दूर तक प्रतिष्ठित होना और दिल्ली के राजधानी बनने के बाद खड़ी बोली का उभरकर आना इसका द्योतक है। यूरोप में पुनर्जागरण का सम्बन्ध व्यापारिक क्रान्ति से और पुनर्जागरण का परिणाम जातीय भाषाओं के अभ्युत्थान के रूप में अच्छी तरह पहचान जाता है।''

उपर्युक्त विचार स्पष्टत: इंगित करते हैं कि बाजारवाद ने हिन्दी के विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह बाजारवाद का ही परिणाम है कि फीजी, मारीशस, सूरीनाम, गयाना, पाकिस्तान, बंग्लादेश, म्यंमार, श्री लंका, जर्मनी, जापाल, कनाडा, रूस, इण्डोनेशिया, मलेशिया, ब्रिटेन, अमेरिका आदि देशों में हिन्दी एक अत्यन्त समृद्ध भाषा के रूप में उभरी है। इससे हिन्दी जहां अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नई उंचाईयों तक पहुंची है वहीं इसमें सहज बदलाव भी हुए हैं। बाजारवाद ने एक नई हिन्दी को जन्म दिया है, जो फंक्शनल हिन्दी है, उपभोक्ता समाज की हिन्दी है, जिसमें इन दिनों लगभग? हर भाषा के लोग बात करते हैं, उसे सांस्कृतिक संवाद का माध्यम मानते है हिन्दी के इस बदलते भूगोल का अध्ययन हम निम्न शीर्षकों के अर्न्तगत कर सकते हैं :-

1- मीडिया और हिन्दी:-

मीडिया के विस्तार ने हिन्दी के स्वरूप को बदलने में सशक्त भूमिका अदा की है। मीडिया के अन्तर्गत प्रिन्ट और इलैक्ट्रानिक मीडिया दोनों आते हैं। पहले हम इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की बात करते हैं। रेडियो, टी.वी. आदि ने विश्व भर में हिन्दी का प्रचार-प्रसार किया है। फिल्मों, धारावाहिकों, गानों, विज्ञापनों, समाचार चैनलों ने हिन्दी के भाषिक स्वरूप को काफी परिवर्तित किया है। हिन्दी फिल्में, हिन्दी गाने तो विशेषकर भारत में ही नहीं सारे खाड़ी देषों में, अप्रवासी भारतीयों और यूरोप-अमेरिका के भारतीय मूल के लोगों में काफी लोकप्रिय हैं। इन्होने हिन्दी की एक मिश्रित शैली को जन्म दिया है। हिन्दी गीतों में अंग्रेजी शब्दों या पदबन्धों का प्रयोग कोई नयी बात नहीं रही।

हिन्दी गानों की इसी लोकप्रियता के कारण आज के हिन्दी गीत अन्तर्राष्ट्रीय धुनों पर लिखे जाने की ओर अग्रसर हैं, जिसमें पाकिस्तानी धुन पर लिखे ''दमादम मस्त कलन्दर'' या ''मेरा पिया घर आया'' जैसे गीत हैं। रिचर्ड मार्क्स के गीत-''दीज ब्लैक ब्लैक आइज'' की धुन पर ''ये काली-काली आंखें'' गीत लिखा गया है। इस अन्तर्राष्ट्रीयकरण के कारण हिन्दी फिल्मी गानों ने हिन्दी के स्वरूप को काफी बदला है।

हिन्दी गानों के अतिरिक्त फिल्मों और धारावाहिकों के संवादों में भी हिन्दी का परिवर्तित स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। 'मुझे एयरपोर्ट जाना है, किसी गेस्ट को लेने', 'ओ यार! यू आर ग्रेट', आदि संवाद भी हिन्दी भाषा में आये एक बड़े बदलाव को रेखांकित करते हैं। यद्यपि कुछ पौराणिक और ऐतिहासिक धारावाहिकों ने अवश्य संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के स्वरूप से विश्व को परिचित कराया है, इनमें रामायण, महाभारत, चाणक्य, टीपू सुल्तान, महारानी लक्ष्मीबाई के नाम लिये जा सकते हैं। इनके सम्बो[illegible] तात श्री, मामा श्री, नाथ, वत्स आदि जनप्रिय हो गये थे। इनमें महारानी लक्ष्मीबाई धारावाहिक तो अब भी विश्व के कई देशों में प्रसारित हो रहा है।

अनेक प्रकार के कार्यक्रम जैसे पॉप शो, गेम शो, फैशन शो, टाक शो, क्विज आदि प्रतियोगिताओं का प्रसारण भी करता है। अगर ये कहा जाये कि इन्हीं सब से बाजार चलता है तो बेहतर रहेगा। इन सबने भी भाषा के हिन्दी-अंग्रेजी मिश्रित रूप को ही प्रमुखता दी है। टी.वी. समाचारों में सबसे अधिक 'हिंग्लिश' सुनने को मिलती है। कभी-कभी तो पूरा का पूरा वाक्य अंग्रेजी में, केवल कारक और क्रियायें हिन्दी मे[illegible] समाचारों में अंग्रेजीनुमा हिन्दी के साथ-साथ उर्दू मिश्रित हिन्दी का रूप भी देखने को मिलता है (उदाहरणस्वरूप-

1- 'जादू-टोने के बिना पर हत्यायें होती हैं'

2- 'इन दूरदराज के गॉवों में तालीम और नौकरी मुह' या करा सकें तो इन्हें इन अन्धविश्वास से छुटकारा दिला सकेंगें।' इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के साथ-साथ प्रिंट मीडिया ने भी हिन्दी की शुद्धता पर व्यापक असर डाला है। कुछ अखबारों में हिन्दी

(शेष पृष्ठ 31 पर)

देशभर में हुए छात्र संघ चुनाव में परिषद को मिली ऐतिहासिक सफलता

भ्रष्टाचार और केंद्र की गलत नीतियों के खिलाफ छात्रों ने दिया जनादेश

देश के कई राज्यों में हुए छात्र संघ चुनाव में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद को जोरदार सफलता मिली है। हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, गुजरात में हुए छात्र संघ चुनाव में परिषद के उम्मीदवारों ने महत्वपूर्ण पदों पर अपना कब्जा जमाया।

हिमाचल प्रदेश के 99 महाविद्यालयों में हुए चुनाव में 205 पद पर ऐतिहासिक जीत परिषद के घोषित उम्मीदवारों को मिली है, इस चुनाव में परिषद के 48 अध्यक्ष, 49 उपाध्यक्ष, 55 महासचिव तथा 53 सहसचिव जीते हैं। पूरे प्रदेश के चुनाव परिणामों पर गौर करें तो 46 महाविद्यालयों में परिषद का पूरा पैनल जीता है। इसके साथ ही लगातार 13वीं बार प्रथम रहने का मौका विद्यार्थी परिषद को प्रदेश के छात्रों ने दिया। मंडी, काँगड़ा, कुल्लू, ऊना सहित प्रदेश के अधिकांश स्थानों पर विद्यार्थी परिषद् के उम्मीदवारों ने विजयश्री का वरण किया।

हिमाचल प्रदेश में जीते हुए छात्र संघ पदाधिकारी

- **राजस्थान के छात्र संघ चुनावों में एबीवीपी को जबरदस्त जीत मिली है । अभाविप ने राजस्थान प्रदेश में हुए छात्र संघ चुनाव में 6 प्रमुख विश्वविद्यालयों के अध्यक्ष समेत कई पदों पर जोरदार जीत दर्ज की।**
- **हिमाचल प्रदेश के 99 महाविद्यालयों में हुए चुनाव में 205 पद पर ऐतिहासिक जीत परिषद के घोषित उम्मीदवारों को मिली है।**
- **वडोदरा के एम. एस. विश्वविद्यालय में महासचिव तथा उपाध्यक्ष ऐसे दोनों पदों पर विद्यार्थी परिषद ने जीत हासिल की।**

राजस्थान के छात्र संघ चुनावों में एबीवीपी को जबरदस्त जीत मिली है । अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने राजस्थान प्रदेश में हुए छात्र संघ चुनाव में 6 प्रमुख विश्वविद्यालयों के अध्यक्ष समेत कई पदों पर जोरदार जीत दर्ज की। प्रदेश के विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में 18 अगस्त को हुए चुनाव के निकले नतीजे के अनुसार राजस्थान विश्वविद्यालय में अध्यक्ष पद के लिए एबीवीपी के राजेश मीणा ने एनएसयूआई के विद्याधार मील को 506 मतों से हराया। मीणा को 3453 वोट मिले। एबीवीपी ने एक साल बाद अध्यक्ष पद हासिल किया है। कोटा विश्वविद्यालय में अध्यक्ष पद पर मनीष चौधरी, उदयपुर विश्वविद्यालय में पंकज बौराना, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर में अध्यक्ष पद पर मोहित जैन, जगतगुरु रामानन्दाचार्य

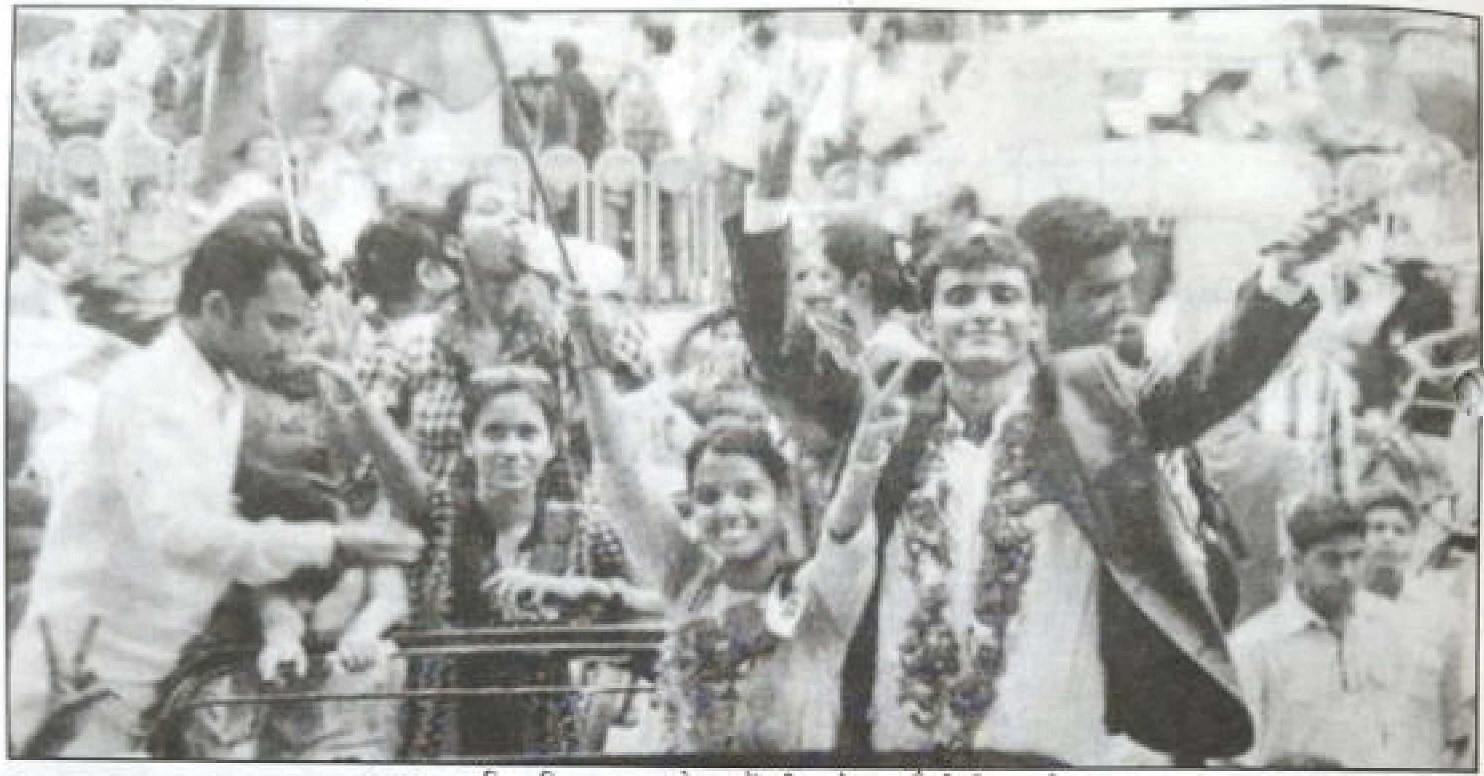

एम.एस. विश्वविद्यालय, वडोदरा में जीत के बाद रैली निकालते हुए

विश्वविद्यालय में अध्यक्ष पद पर घनश्याम गौतम, बीकानेर के वेटनरी विश्वविद्यालय के अध्यक्ष समेत कई प्रमुख पदों पर एबीवीपी के प्रत्याशी विजयी रहे।

देहरादून, उत्तराखंड के एमकेपी पीजी कॉलेज छात्र संघ चुनाव में अध्यक्ष पद पर एबीवीपी की महक और सचिव पद पर स्वतंत्र उम्मीदवार आस्था सिंह विजयी रहीं। जबकि विश्वविद्यालय प्रतिनिधि पद पर भी एबीवीपी की आयुषी थलवाल ने जीत दर्ज की। उत्तरखंड के अन्य स्थानों पर अभी चुनाव होने बाकी हैं।

वडोदरा, गुजरात के एम. एस. विश्वविद्यालय में हुए छात्र संघ चुनाव के परिणाम भी विद्यार्थी परिषद् के पक्ष में आये हैं।

22 अगस्त को हुए चुनाव में अभाविप के जयेश बलाई 5423 वोट के साथ महासचिव पद के लिए विजयी रहे जबकि उपाध्यक्ष पद पर अभाविप के सई विचारे 5968 वोट के साथ चुनाव जीतने में सफल रही। सूरत में प्रत्येक विभाग से चयनित होकर बनने वाले सीनेट सदस्य के चुनाव में भी परिषद् के अधिकांश प्रत्याशी विजयी रहे। परिषद् कार्यकर्ताओं ने 12 में से 9 सीटों पर अपना कब्जा जमाया।

राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और गुजरात में हाल में हुए छात्र संघ चुनावों के नतीजों से एक बात तो साफ हो गयी है कि देश की युवा शक्ति कांग्रेस व उसके नेतृत्व में चल रही केंद्र सरकार के भ्रष्टाचार से परेशान हो गयी है और उसे सबक सिखाना चाहती है। देश को लुटते, आर्थिक मोर्चे पर पिटते देख छात्र शक्ति अब निर्णायक जंग छेड़ने का ऐलान कर चुकी जिसके लक्षण छात्र संघ चुनाव के परिणामों में देखने को मिले है।

राजस्थान के विश्वविद्यालयों और कालेजों में हुए छात्र संघ चुनावों में कांग्रेस के छात्र संगठन NSUI का सफाया हो गया है और ज्यादातर जगहों पर ABVP ने जीत का डंका बजा दिया है।

साम्यवादी विचार को नकारने के साथ साथ इस जीत ने साबित कर दिया की देश की छात्र शक्ति ने भ्रष्टाचार, केंद्र की गलत शैक्षणिक और आर्थिक नीति, विदेशी विश्वविद्यालय, शिक्षा के व्यापारीकरण जैसे प्रमुख मुद्दों के खिलाफ परिषद के लगातार हुए आन्दोलन को समर्थन दिया है। आने वालें दिनों में दिल्ली सहित देश के अन्य प्रान्तों में होनेवालें चुनावों में भी ऐसे ही परिणाम आने की अपेक्षा है।

निश्चित तौर पर देशभर में हुए छात्र संघ चुनावों के परिणामों ने भ्रष्टाचार के खिलाफ विद्यार्थी परिषद की मुहिम के समर्थन में हल्ला बोल दिया है। ■

'नेशनलिज्म डेफिसिट' का शिकार एक देश

■ स्वदेश सिंह

राष्ट्र निर्माण एक सतत् प्रक्रिया है. इस काम को सावधानी, सजगता और जिम्मेदारी से करना पड़ता है। ये किसी एक की जिम्मेदारी नहीं होती। समाज के हर वर्ग की इसमें समान भागीदारी होती है। राष्ट्रवाद का विचार हमारे दैनन्दिन जीवन में होना चाहिए लेकिन देखने में यही आता है कि देश पर जब कभी संकट आता है या पड़ोसी देश पाकिस्तान से जुड़ी कोई घटना होती है तभी हमारा राष्ट्रवाद जागृत होता है।

आजादी के बाद से अब तक का इतिहास उठा कर देखें तो ऐसे कम ही क्षण मिलेंगे जिसमें देश एक साथ खड़ा दिखा हो। आज भी आरएसएस जैसी राष्ट्रवादी ताकतें है जो दधीचि की तरह अपनी हड्डियां गलाकर राष्ट्रनिर्माण के काम में लगी हुई हैं। लेकिन आजकल देश के अंदर और बाहर भारतीय राष्ट्रवाद के शत्रु ज्यादा दिखते हैं। ये शत्रु राष्ट्रनिर्माण के काम में लगे इन साधकों को हर तरीके से घातक सिद्ध करने में लगे हैं। ऐसा लगता है कि इस देश में राष्ट्रनिर्माण का प्रकल्प ठीक ढंग से काम नहीं कर रहा। आजादी के बाद और संविधान निर्माण की प्रक्रिया से ही ऐसा देखने में आया है। इस 65 सालों में एक 'नेशनलिज्म डेफिसिट' की स्थिति पैदा हो गई है या और साफ कहा जाए तो ऐसी स्थिति पैदा करने की कोशिश की गई है।

'नेशनलिज्म डेफिसिट' की इस अवधारणा को हम असम में हाल में हुई घटना के माध्यम से समझने की कोशिश करेंगे जहां कांग्रेसी वोट बैंक की राजनीति के चलते लाखों की संख्या में बांग्लादेशी असम में आए। सबसे अधिक बांग्लादेशी घुसपैठिये असम के सीमावर्ती जिलों में बस गए। आज आलम ये है कि असम के 10 से अधिक जिले आधिकारिक रूप से मुस्लिम बहुल हो गए हैं। ये मुस्लिम बांग्लादेश से आए घुसपैठिये हैं और असम में हर छोटा बड़ा काम करने लगे हैं जिससे वहां की स्थानीय असम की जनता को रोजगार के साधन नहीं मिल पा रहे।

ये बांग्लादेशी घुसपैठिये असम के आदिवासी इलाकों में जाकर भी बस गए। सीधे-साधे आदिवासी बोडो ने इन्हें अपनी जमीनें जोतने के काम में लगा दिया जिससे इनको रोजगार मिले। लेकिन आज आलम ये है कि इनके वोटों से बनी पार्टी सत्ता में है। एक ऐसी राजनीतिक पार्टी असम में बन चुकी है जो इन्हीं के वोटों के दम पर राजनीति कर रही है। ऐसे में इन बांग्लादेशी घुसपैठियों की हिम्मत इतनी बढ़ गई कि इन्होंने बोडो आदिवासियों पर जुल्म ढाना शुरु कर दिया। युवकों का कत्लेआम किया और औरतों की इज्जत लूटनी शुरू कर दी। पहले तो छिटपुट घटनाएं सामने आईं लेकिन जुलाई 2012 में ऐसी कई बड़ी घटनाएं हुईं जिसमें बड़ी संख्या में बोडो आदिवासियों पर हमले की बात सामने आई।

आज की तारीख में लाखों की संख्या में बोडो आदिवासी अपने ही देश में शरणार्थी शिविर में रहे हैं। सैकड़ों बोडो मार दिए गए हैं। 4,000 ऐसी महिलाएं जो गर्भवती हैं और वो अपना बच्चा अपने ही देश में एक शरणार्थी शिविर में जनेंगी। 250 से अधिक ऐसे बच्चे मिले हैं जिनके मां बाप का पता नहीं है।

लेकिन इस देश की जनता, मीडिया और प्रबुद्ध समाज इस घटना को कैसे समझ रहा है या समझाने की कोशिश कर रहा है। इस देश की बहुतायत जनता को इस घटना से कोई लेना-देना नहीं है। शायद इस देश के करोड़ों लोगों ने 'बोडो' शब्द पहली बार सुना हो। देश के किस कोने में ये घटनाएं हो रही हैं और उसका उनके जीवन पर क्या परिणाम पड़ सकता है इससे वो अनभिज्ञ हैं या बने रहना चाहते हैं। इस देश का मीडिया इसे हिंदू बनाम मुस्लिम की लड़ाई बनाकर दिखा रहा है और बोडो समाज की गलती बता रहा है। इस देश का प्रबुद्ध वर्ग इस जुगत में है कि कैसे वो ये सिद्ध कर ले जाए कि इस घटना के पीछे आरएसएस का हाथ है या कैसे निरीह, बेचारे बांग्लादेशियों को बोडो हमलावर मार रहे हैं। इस देश के प्रधानमंत्री भी दंगा-प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करने तब जाते हैं जब बांग्लादेशियों की तरफ से हाय-तौबा मचनी शुरू होती है।

हमारे हजारों उत्तर-पूर्व के भाई-बहन अपने ही देश में असुरक्षित महसूस करने लगे हैं और अपने घरों की तरफ जाने लगे हैं और सरकार कहती है कि इसमें पाकिस्तान का हाथ है। असम में बांग्लादेशी हमलावरों से जब बोडो आदिवासी बदला लेते हैं तब इस देश की एक जमात के लोग देश के अलग-अलग हिस्सों में सड़कों पर हजारों की संख्या में प्रकट हो जाते हैं और राष्ट्रीय प्रतीकों और महापुरुषों की मूर्तियां तोड़ते हैं। क्या इसमें भी पाकिस्तान का हाथ है। इस घटना पर देश के कथित बुद्धिजीवी मौन साध जाते हैं। कोई बांग्लादेशी घुपैठियों के खिलाफ एक शब्द भी नहीं लिखता। उनकी कलम को कौन रोक लेता है। सरकार का कोई नेता एक लाइन इस तरह की दो टूक पंक्ति नहीं बोलता कि बांग्लादेशी घुसपैठियों ने देश के एक हिस्से में भारतीय नागरिकों पर हमला बोला है हम इसका मुंहतोड़ जवाब देंगे। ऐसा बोलता सरकार का कोई नेता नहीं सुना जाता कि आजाद मैदान के पास अमर जवान ज्योति को जिसने भी तोड़ा है उसे कठोर सजा मिलेगी। नेताओं की छोड़िए कोई सामाजिक कार्यकर्ता इसके लिए मोर्चा नहीं निकालता। अभी हाल ही में एक नेता की मूर्ति क्या टूट गई देश में हंगामा मच गया जबकि वो नेता अभी जिंदा है।

असम की घटना और उसके बाद के घटनाक्रम से ऐसा लगता है कि इस देश में कुछ संगठनों को छोड़ दिया जाए तो ऐसा कोई भी संगठन नहीं है जो समग्रता से राष्ट्र को केंद्र में रखकर चिंतन करता हो। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उसके अनुषांगिक संगठन ऐसे मौकों पर हमेशा आगे दिखाई देते हैं। आज असम के दंगा प्रभावित क्षेत्रों में सैकड़ों की संख्या में संघ के स्वयंसेवक लोगों की हर संभव मदद कर रहे हैं। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद बांग्लादेशी घुसपैठ की समस्या पर देश अलग अलग तरीके पहले ही आगाह कर चुका है।

ऐसा लगता है कि राष्ट्रवाद का ध्वजावाहक होने का अगर कोई संगठन सच्चा हकदार है तो वो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ही है। लेकिन संघ की अपनी सीमाएं हैं, सीमित संसाधान हैं। वो अपना काम पिछले 87 सालों से कर रहा है। ऐसा नहीं है कि संघ के कामों की वजह से कोई सतयुग आ गया है लेकिन हमें सोचना होगा कि अगर आज देश की ऐसी स्थिति है तो यदि संघ जैसी कोई राष्ट्रवादी ताकत देश में ना नहीं होती तो देश का क्या हाल होता।

संघ अपना काम कर रहा है लेकिन अगर हम समग्रता में देखें तो राष्ट्रवाद का विचार इस दौर में कमजोर होता ही दिखता है। 'नेशनलिज्म डेफिसिट' ही दिखाई देता है। इस देश की सरकार और कथित प्रबुद्ध वर्ग अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए राष्ट्रवाद के विचार को कमजोर करने का काम कर रहे हैं। कभी अरूंधती रॉय जैसी लेखिका माओवादी हिंसा का समर्थन करती है तो कभी अग्निवेश और प्रशांत भूषण जैसे वकील कश्मीर की आजादी की बात करते हैं। इन्हें हमारा मीडिया पूरा स्थान देता है। ऐसे बुद्धिजीवियों की एक पूरी जमात खड़ी हो गई है जो इस देश में चल रहे हर अलगाववादी आंदोलन और भारत को कमजोर करने वाली हर मांग का समर्थन करती है।

लेकिन भारत सिर्फ एक देश नहीं है। भारत एक विचार है, सोच है। यह एक जीवित सभ्यता है। एक ऐसी सभ्यता जो बहुलतावाद से लेकर अद्वैत और स्यादवाद से लेकर भौतिकवाद जैसे विचारों, शक, हूण, कुषाण से लेकर पारसी, मुसलमान और इसाईयों जैसे समाज जो बाल्मि[illegible], व्यास, शंकर, बुद्ध जैसे विद्वानों को अपने समाहित कर बराबर स्थान पर रखती है। यही इसकी खूबी है। भारत चिरंतन है, सनातन है।

इस पर भी ध्यान देना होगा कि दुनिया को अपने रंग, विचार और धर्म का जामा पहना देने का सपना देखने वाली ऐसी कई ताकतें है जो भारत की इस सच्चाई को बखूबी जानती हैं। वो जानती हैं कि भारत में कुछ ऐसा है जो इससे टूटने नहीं देता, मिटने नहीं देता। 21वीं सदी में इन सभी ताकतों का ध्यान भारत पर लगा है। उन्हें पता है कि भारत को लड़कर लंबे समय तक गुलाम बनाया नहीं जा सकता। इसलि[illegible] अब वो भारत की सोच को खत्म करने में लगे हैं। वो भारत में मानवतावाद, विश्वबंधुत्व, बहुलतावाद जैसे जुमले नए अर्थों के साथ गढ़कर 'नेशनलिज्म डेफिसिट' बढ़ा रहे हैं। हमें और खासतौर से हमारी युवा पीढ़ी को इस षड्यंत्र को समझना होगा।

दुख की बात ये है कि उनके इस काम में हमारे में से भी कई भाई-बंधु शामिल हो चुके हैं। जयचंद, मीरजाफर पहले भी हुए हैं। लेकिन भारत अपनी लड़ाई कभी हारा नहीं है, आगे भी नहीं हारेगा।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार है)

छात्र हितों के लिए संघर्ष

भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा में विद्यार्थी परिषद् का उग्र प्रदर्शन

प्रदर्शन के दौरान प्रशासन के रवैये से आहत छात्रों का गुस्सा भी फूट पड़ा जिसके बाद पुलिस के साथ हल्की झड़प भी हुई। छात्रों के गुस्से को देखते हुए कुलपति तुरंत अपनी बैठक छोड़कर बाहर निकल प्रतिनिधिमंडल से मिलने को मजबूर हुए।

आगरा। परीक्षा परिणाम जल्द घोषित करने, कॉलेज में नामांकन हेतु सीटे बढ़ाने, छात्र संघ चुनाव अविलम्ब करवाने सहित 21 सूत्री मांग के समर्थन में विद्यार्थी परिषद् ने भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा में जोरदार प्रदर्शन किया। छात्रों ने पालीवाल पार्क स्थित पुस्तकालय के समीप एकत्र होकर जुलुस निकालते हुए एवं छात्र विरोधी नीतियों के खिलाफ नारे लगाते हुए विश्वविद्यालय परिसर पहुंचे।

प्रदर्शन के दौरान प्रशासन के रवैये से आहत छात्रों का गुस्सा भी फूट पड़ा जिसके बाद पुलिस के साथ हल्की झड़प भी हुई। छात्रों के गुस्से को देखते हुए कुलपति तुरंत अपनी बैठक छोड़कर बाहर निकल प्रतिनिधिमंडल से मिलने को मजबूर हुए। छात्रों से वार्ता के बाद कुलपति ने सभी मांगों को जल्द से जल्द पूरा करने का भरोसा दिलाया।

विद्यार्थी परिषद् ने मांगों को न माने जाने की सूरत में 17 दिसंबर के बाद बड़े आन्दोलन करने का ऐलान भी किया है।

प्रदर्शन में प्रदेश अध्यक्ष यादवेन्द्र प्रताप सिंह, प्रान्त संगठन मंत्री सुनील वाजपेयी सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित थे। ■

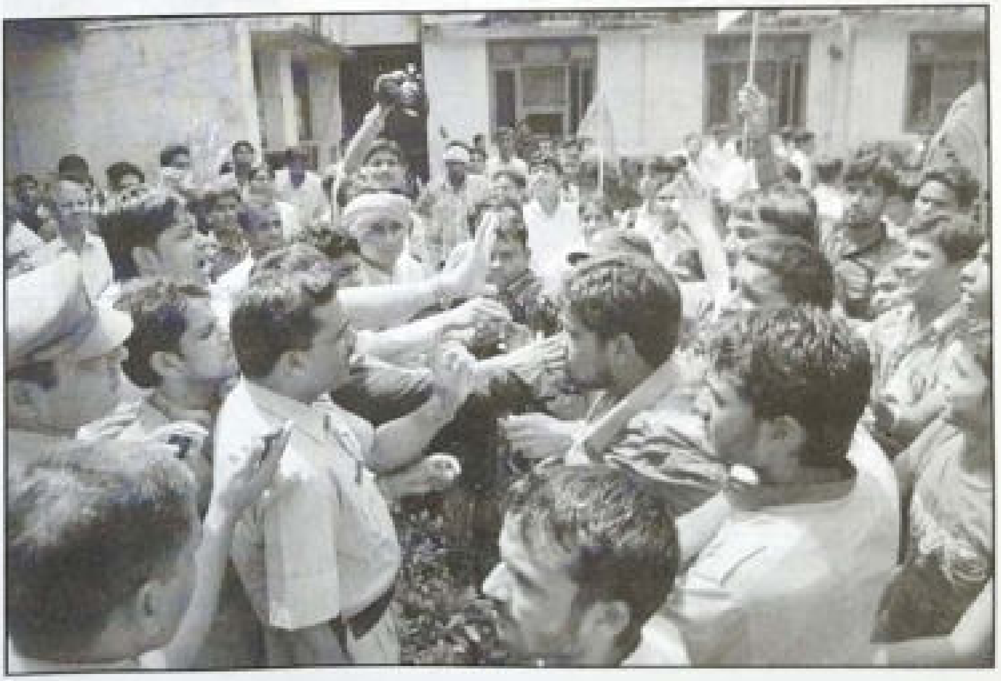

केवल चिंतक ही नहीं कृतिवीर थे आपटे जी

■ सदाशिव गौ. देवधर

बलवंत परशुराम आपटे नामक व्यक्तित्व सदा के लिए अंतर्धान हुआ। उनका व्यक्तिमत्व कहने में 'बाल', परन्तु वास्तव में 'बलवंत' रहा। अब उनके नाम के साथ 'स्वर्गीय' उपाधि आ गयी।

कालाय तस्मै नमः!

शहीद राजगुरु के गांव में (खेड-राजगुरुनगर) आपटे जी का जन्म हुआ। वहीं माध्यमिक शिक्षा हुई। आगे फर्ग्युसन महाविद्यालय से बी.ए. मुम्बई विश्वविद्यालय से एम.ए., एल.एल.एम. हुए।

सारी शिक्षा उत्तम गुणवत्ता से पूरी की। महाविद्यालयीन जीवन से स्वयंसेवक रहे। न्यू लॉ कॉलेज, मुम्बई में प्राध्यापक रहे। मुम्बई उच्च न्यायालय में वकालत की। निष्णात वकील रहे। कानून के विशेषज्ञ थे। वेस्टर्न बार एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे।

सरकार की अनेक प्रकार की विशेष समितियों पर काम किया। प्रभावी योगदान दिया। 12 वर्ष राज्यसभा सांसद रहे। अभ्यास पूर्ण योगदान संसदीय कार्यकाल में दिया। विशेष कारणों से अध्ययनार्थ विविध देशों का प्रवास किया।

उनके पिताश्री भी अच्छे, जाने माने वकील थे। सार्वजनिक जीवन में सक्रिय थे। खेड़ में जनता बैंक शुरु करने में उनकी प्रभावी भूमिका थी। आपटे जी के बड़े भाई डॉ. भाऊ आपटे, एम.बी.बी.एस., एम.डी. हैं। आपटे रुग्णालय का ठाणे वैद्यकीय क्षेत्र में अच्छा नाम है।

डॉ. भाऊ वेद विद्या के उपासक, अभ्यासक तथा अध्यापक है। ठाणे के सामाजिक जीवन में भी उनका सहभाग रहता है। कुछ वैदिक विषयों पर उनका महत्वपूर्ण ग्रंथरूप लेखन है।

निर्मला भाभी (आपटे जी की पत्नी)

गणित की प्राध्यापक रही। उन्होंने विवाह के पश्चात् कुछ वर्षों में नौकरी से त्यागपत्र दिया। सार्वजनिक जीवन में सक्रिय रही। भारतीय स्त्री शक्ति के कार्य में राष्ट्रीय स्तर पर उनका प्रमुख सहभाग है। चि. सौ. जान्हवी, आपटे जी की सुकन्या एम.बी.बी.एस., एम.डी. है। दो वर्ष अभाविप की पूर्णकालिक (कोल्हापुर) रही।

संस्कार, संस्कृति, विद्वत्ता, गुणवत्ता एवं समाजधर्म के दृष्टि से आपटे जी को समृद्ध विरासत प्राप्त हुई। वह उन्होंने अपने प्रयास एवं कार्य से और अधिक सम्पन्न की।

आपटे जी के व्यक्तित्व को देखें, स्वभाव का अनुभव किया तो हर क्षेत्र में उत्कटता का दर्शन होता है। परिपूर्णता का आग्रह दिखाई देता था। सहजता, संवादशीलता, स्वाभाविकता का परिचय होता था।

आपटे जी ने अपना कर्तृत्व संपन्न बहुमुखी जीवनपुष्प भारत माँ की सेवा में समर्पित किया। उनके व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में यथार्थ सांस्कृतिक भारतीयता का दर्शन होता है। इस प्रकार का दर्शन आजकल विरल हो रहा है।

उनके स्वभाव में मैत्रभाव, सर्वसमावेशकता, सामाजिक संवेदना, स्पष्टवादिता, वैचारिक स्पष्टता, अध्ययनशीलता, सत्य का आग्रह, संघर्षणता, समय पालन आदि गुणों की अनुभूति होती थी। उनका गुस्सा भी उत्कट होता था, परन्तु वह सकारण और चंद मिनटों के लिए रहता था।

खुद की छोटी सी गलती के लिए भी कार्यकर्त्ता से क्षमाप्रार्थी रहते थे। अपने 'विद्यार्थी निधि' कार्यकर्त्ता श्री रमेश घुडे जी ने कहा 'एक बार जल्दबाजी में गलती से आपटे जी के हाथ से एक चेक कोने में फट गया था। मैं वह लेने के लिए उनके घर गया, तो उस लिफाफे के साथ, आपटे जी ने लिखी चिट्ठी थी। रमेश, माफ करना, गलती से चेक फट गया है।'

(आपटे जी उस समय कोर्ट में गए थे) रमेश जी को आश्चर्य हुआ। 'इतने बड़े कार्यकर्त्ता, मेरे जैसे छोटे कार्यकर्त्ता से भी क्षमस्व कहते हैं'। 'मेरे जीवन के कठिन समय पर हर पल साथ रहे।' यह उनके मन का बड़प्पन था। कार्यकर्त्ताओं के साथ ही रहने की उनकी आदत थी। वर्ग, बैठकें, अधिवेशनों के समय विशेष व्यवस्था की अपेक्षा ही नहीं करते थे। सब कुछ 'सहनाववतु.....सहवीर्यं करवावहै।'

1978 को दिल्ली में संसद पर छात्र प्रदर्शन था। रामलीला मैदान पर तंबू लगे थे। सुबह स्नान की ऐसी ही व्यवस्था थी। उस समय एक रास्ते पर अपना पानी का टैंकर खड़ा किया था। यशवंतराव, आपटे जी ने कार्यकर्त्ताओं के साथ वहीं रास्ते पर स्नान किया।

सादगीपूर्ण सहज जीवन रहा। एक बार बैठक के समय नमकीन की थाली आयी। 8-10 कार्यकर्त्ता थे। आहिस्ता-आहिस्ता थाली खाली होती गयी। थोड़ा सा नमकीन बचा था। सब उठने लगे। आपटे जी ने शेष वह नमकीन हाथ में लिया और कहा, 'आज भी अनेकों को खाने को कुछ भी नहीं मिलता है। ऐसा थाली में छोड़ देना, ठीक नहीं।' वह बोले, 'अन्न ऐसा ही छोड़कर, उन्मत्त नहीं होना, खाकर उन्मत्त हो चलेगा।'

किसी प्रवास में रहते थे, तो सभी साथियों की हर विषय में सक्रिय चिंता करते थे। अभाविप के लिए प्रवास, अपने निजी पैसे से करते थे।

सहजता से कहीं भी सहभागी होना, ऐसा सामूहिकता का उनका स्वभाव था। काम करते समय, सभी से अनौपचारिक बातचीत करते थे। इसमें कार्यकर्त्ता का व्यक्तिगत जीवन, सुखदुख की बातें, प्रत्यक्ष कार्य में सहभाग आदि जानने का प्रयत्न रहता था। इसी में से मनुष्य परख होती थी। व्यक्ति परख का गुण उनके पास था।

अनेकों ने उनकी विविध प्रकार की निरपेक्ष सहायता से अपने आपको सम्भाला, प्रगति की। पारिवारिक कठिनाईयों में सहजता से आपटे जी ने अनेक कार्यकर्त्ताओं को मानसिक, आर्थिक रूप से निरपेक्ष भाव से आधार दिया।

प्रा. शेखर जी ने कहा, 'हमारे लिए सभी प्रकार से श्री. और सौ. आपटे जी पालक रहे। उनसे ली हुई राशि एक बार उन्हें देने के लिए गया था, वह बोले, शेखर, कब मैंने तुम्हें पैसे दिये थे?' और मैंने जब उनके हाथ में जबरदस्ती ऐसे थमा लिए तो देखा, उनके आंखों में आंसू थे।'

संत तुकाराम जी का अभंग (दोहा) याद आता है। ''जोडोनिया धन उत्तम व्यवहारे, उदास विचारे वेंच करी' (उत्तम पद्धति से धन प्राप्ति करें, और निरपेक्ष भाव से उसका विनियोग करें) ऐसा अध्यात्मिकता का एक अप्रत्यक्ष स्पर्श उनके व्यवहार में था।

उनके घर चि. सविता नामक पूर्णकालिक कार्यकर्त्ता रहती थी। एक समय आपटे जी के घर पर एक कार्यक्रम था। रिश्तेदार, मेहमान आये थे। 2-3 दिन रहने वाले थे। चि. सविता ने आपटे जी से कहा, 'अपने घर कार्यक्रम है, रिश्तेदार आये हैं, मैं 2-4 दिन दूसरे कार्यकर्त्ता के घर रहने के लिए जाती हूं।'

श्री. और सौ. आपटेजी ने कहा 'सविता, तुम पूर्णकालिक हो, अपने घर रहती हो, तो तुम भी हमारे परिवार की सदस्य हो। जैसे रिश्तेदार आए हैं, तो हम भी यही रहेंगे ना? तो तुम भी यहीं घर में रहो। हाँ, अगर तुम्हें कुछ अड़चन हो तो तुम 2-4 दिन अन्य किसी कार्यकर्त्ता के घर जाओ।' सविता वहीं आपटे जी के घर रही। यह आपटे जी दंपति का कार्यकर्त्ता के प्रति अपनापन था।

मैं अनेक बार, अनेक दिन उनके घर 'गिरीश' पर ही रहता था। एक बार भोर सुबह मैं आधी-अधूरी नींद में था। अंदर दोनों हलके से बातें कर रहे थे। आपटे जी, निर्मला भाभी को कह रहे थे, 'निर्मला, अब अपना क्या है? बिटिया की शिक्षा पूरी होगी। उसका विवाह होगा। फिर अपने लिए क्या? मदन जी, सदाशिव जैसे कार्यकर्त्ताओं की चिंता करना और क्या?' ऐसा उनका समाजहित की पृष्ठभूमि पर चल रहा घर-संसार था।

आपटे जी का बड़ा परिवार था। भाई, बहन, भतीजे, भतीजियाँ, भाँजे, भाँजियाँ, मामा, मामी आदि-आदि।

सभी के साथ उनका प्रेम-अपनापन का व्यवहार था, रिश्ता था सभी के घरेलू कार्यक्रमों में, उत्सवों मे सहभाग होता था। आपटे जी के प्रति अन्य सभी का आत्मीय, आदरभाव था।

उनका अपना सामाजिक कार्य। विचार केवल घर के बाहरी हिस्से तक (ड्राइंग रूम) सीमित नहीं था। सब प्रकार से घर में सामाजिक, राष्ट्रीय विषयों पर चर्चा, विमर्श-संवाद चलता था। इस कारण परिवार के सभी सदस्य सामाजिक/सांस्कृतिक कार्य में हिस्सा लेते रहे।

(शेष पृष्ठ 29 पर)

असम में गत कुछ दिनों से हुई हिंसा ने सारे देश को झकझोर के रख दिया। 20 जुलाई को हुई 4 बोड़ो युवकों की हत्या के बाद यह मामला हिंसक बना और बढ़ता ही गया। सरकार माने ना माने इस विषय के पीछे बांग्लादेश से हो रही अवैध घुसपैठ है यह तो स्पष्ट है। असम में हो रही हिंसा के परिणाम देश के कई हिस्सों में देखने को मिले जिससे मुस्लिम समुदाय ने मुंबई, लखनऊ में हिंसक वारदातों को अंजाम दिया। साथ ही पूर्वोत्तर राज्यों के छात्रों को धमकाना तथा कुछ जगह मारपीट की भी घटनाएं हुई। एक संवेदनशील और सजग छात्र संगठन के नाते अभाविप ने इसमें समर्थ रूप से अपनी भूमिका निभाई। पूर्वोत्तर राज्यों के छात्रों के साथ खड़े रहते हुए उनका हौंसला बढ़ाया, उनको घर जाने से रोका, सुरक्षा प्रदान की। असम के हिंसाग्रस्त क्षेत्र का भी अभाविप के प्रतिनिधि मंडल ने दौरा किया, तथ्य जुटाए। इसी विषय के कुछ चित्र अवलोकनार्थ यहां प्रस्तुत हैं:-

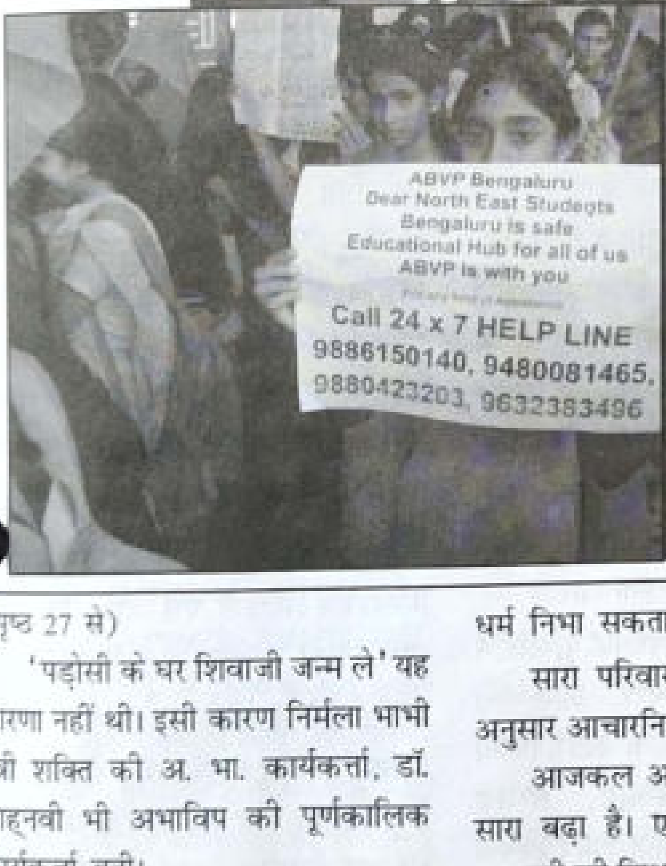

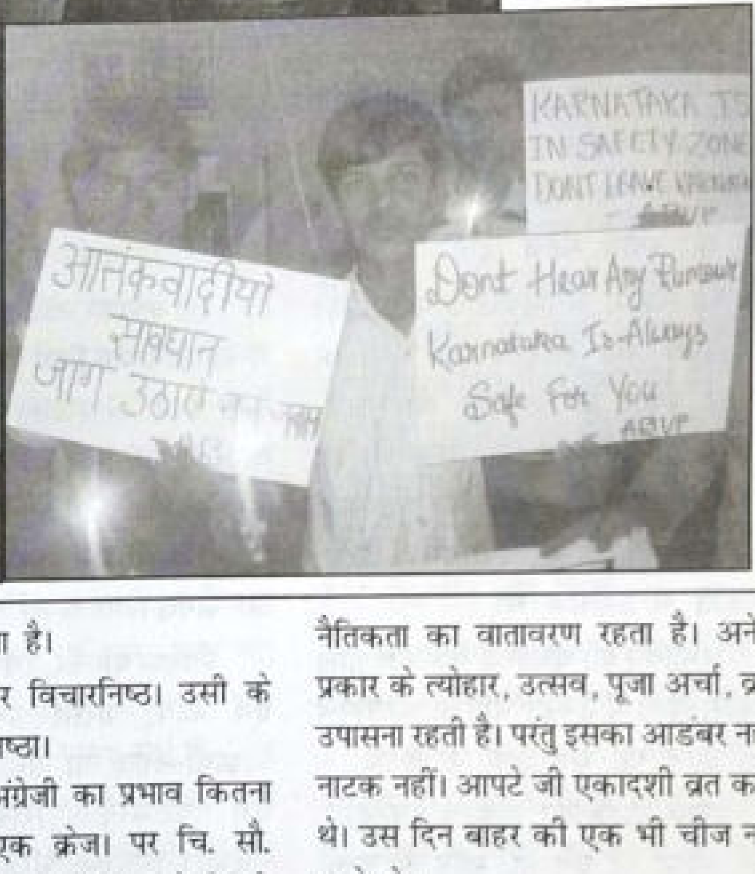

(पृष्ठ 27 से)

'पड़ोसी के घर शिवाजी जन्म ले' यह धारणा नहीं थी। इसी कारण निर्मला भाभी स्त्री शक्ति की अ. भा. कार्यकर्त्ता, डॉ. जाह्नवी भी अभाविप की पूर्णकालिक कार्यकर्त्ता बनी।

केवल स्वयं ही नहीं, सारा ही परिवार, सहजता से कार्यकर्त्ता है। यह अनुभव आजकल कम हो रहा है। भौतिक जीवन का विचार करते हुए कहाँ, कितना बढ़ना और कहाँ रुकना (व्यवहार में) यह स्पष्ट होना आवश्यक। इसी कारण व्यक्ति समाज धर्म निभा सकता है।

सारा परिवार विचारनिष्ठ। उसी के अनुसार आचारनिष्ठा।

आजकल अंग्रेजी का प्रभाव कितना सारा बढ़ा है। एक क्रेज। पर चि. सौ. जाह्नवी की शिक्षा मराठी स्कूल में ही हुई, न कि किसी कान्वेंट में या अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में। इसी प्रकार आज सौ. जाह्नवी की बिटिया चि. श्रुतजा (सौ. जाह्नवी, शिरीष जी केदारे की सुकन्या) मराठी माध्यम के स्कूल में ही पढ़ रही है।

घर परिवार में धार्मिकता का याने नैतिकता का वातावरण रहता है। अनेक प्रकार के त्योहार, उत्सव, पूजा अर्चा, व्रत, उपासना रहती है। परंतु इसका आडंबर नहीं, नाटक नहीं। आपटे जी एकादशी व्रत करते थे। उस दिन बाहर की एक भी चीज नहीं खाते थे।

समाजिक गलत प्रथा, कुप्रथाओं का कभी भी समर्थन नहीं, ऐसे कुप्रथा के कठोर टीकाकार थे। सारा घर परिवार ऐसा उचित समाजधर्मी था। इसी वजह से सौ. जाह्नवी का विवाह अंतरजातीय हो सका। सहजता से हो गया।

मैंने इन दिनों में एक घटना सुनी। श्री. और सौ. आपटे जी एक देवी के मंदिर गए थे। देवी की पूजा करने की इच्छा थी। मंदिर पहुंचे वहां पुजारी ने बताया, 'मन्दिर के गर्भागार में महिलाओं को प्रवेश नहीं है।' आपटे जी ने कहा, 'लक्ष्मी जी की पूजा के लिए मेरी गृहलक्ष्मी नहीं आ सकती, तो यहां पूजा ही नहीं करेंगे।

सारे वापिस निवास पर लौट आए। कालोचित सामाजिक सुधार, समरसता के लिए अत्यंत आग्रही रहे।

आपटे जी प्रतिदिन (घर में रहे तो) पूजा करते थे। संध्यावंदन करते थे। सोने के पूर्व भगवत् गीता का एक अध्याय कहते थे। सब कुछ सहज, मनः पूर्वक करते थे। घर में घरपन (पारीवारिक भाव) रखने का सभी का प्रयास सहज रहता था।

वह साहसी, संघर्षपील कार्यकर्त्ता रहे। साथ-साथ, वह साहित्य एवं कला के विविध प्रकार के जानकार थे। नाट्य, चित्रपट, गीत, संगीत के रसिक थे। इन विषयों में समीक्षात्मक दृष्टि थी। कुछ मात्रा में कवि थे। वाचन (रीडिंग) कला, संस्कृति के उपासक थे।

अभाविप की वैचारिक एवं कृतिशील विकास यात्रा में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही। आज यह बात सभी जानते हैं।

दत्ताजी डिडोलकर, यशवंतराव केलकर, बाल आपटे जी एवं मा. मदन जी इनके मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक दृष्टि के अथक प्रयास से अभाविप एक सबसे बड़ा छात्र संगठन एवं छात्र आंदोलन (मूव्हमेंट) बना।

आपटे जी की वैचारिक दूरदृष्टि, चिंतन, मनन, अचूक निर्णयक्षमता, कृति, कृतिपोषक योजना, रचनात्मक संघर्षशीलता और अनुवर्ती प्रयास, कल्पना इसका अनुभव अभाविप की प्रगति यात्रा में अनेक बार आया है।

वह केवल चिंतक नहीं थे, कृतिवीर थे। जमीनी अनुभव लेते थे, यह भी उनकी विशेषता रही।

चीन-भारत युद्ध, पाक-भारत युद्ध, गुजरात आंदोलन, बिहार (जयप्रकाश) आंदोलन, आपातकाल के खिलाफ संघर्ष, असम आंदोलन, चलो श्रीनगर आदि संघर्ष के प्रसंग अथवा समता/समरसता यात्रा, शिक्षा सुधार के लिए किए आंदोलन और वैचारिक प्रयास, सामाजिक आरक्षण के लिए अभाविप द्वारा किए हुए प्रयास आदि घटनाओं के समय, उनका वैचारिक एवं कृतिरूप मार्गदर्शन अधोरेखित हुआ है।

स्व. केलकर जी द्वारा अपने कार्यपद्धति में अनेक प्रयोग किए गए। आपटे जी भी सभी प्रकार के प्रयास, प्रयोगों का स्वागत करते थे, प्रोत्साहन देते थे। विचार बैठकें, समीक्षा-योजना बैठकें आदि का प्रारंभ शायद अभाविप ने किया। इसमें आपटे जी का योगदान महत्वपूर्ण रहता था।

शैक्षिक परिवार, रचनात्मक दृष्टिकोण एवं कार्य, परिसर प्रभाव, आज का विद्यार्थी-आज का नागरिक आदि विषय एवं वर्तमान परिस्थिति, समाज परिवर्तन-व्यवस्था परिवर्तन आदि विषयों पर विचार/चिंतन बैठकों में गहराई से विस्तृत चर्चा होती थी। आपटे जी का अमूल्य योगदान रहता था। छात्र संगठन एवं आंदोलन को एक तत्वज्ञानात्मक अधिष्ठान देने में उनका प्रमुख रूप में योगदान रहा।

दलगत राजनीति से उपर उठकर, लोकशक्ति का जागरण, परन्तु राजनैतिक जागृति याने राष्ट्रकारण का अतीव महत्व वह प्रतिपादित करते थे। इस प्रकार से सामाजिक दण्डशक्ति खड़ी करनी होगी ताकि राजनैतिक पक्ष, सत्ता, व्यवस्था ठीक चले - यह उनका विचार था। इसलिए शिक्षा के पश्चात विद्यार्थी परिषद के पूर्व कार्यकर्त्ताओं ने सभी क्षेत्रों में काम करना होगा, यह कहते थे।

राजनीति, राजकीय पक्ष, उनका महत्व अपनी जगह है ही, परन्तु एक साधक करके। सही सामाजिक परिवर्तन के लिए व्यक्ति परिवर्तन आवश्यक है, यही आपटे जी कहते थे।

उनका अनेक कार्यकर्त्ताओं से जीवंत व्यक्तिगत संबंध था। अनेकों ने उनको देखा, सुना, उनसे मार्गदर्शन किया, सलाह ली, विचार विमर्श किया। व्यक्तिगत एवं संगठन के लिए संवाद किया। इससे अनेकों को (चाहे अभाविप संबंधित भी न हो) सामाजिक कार्य की प्रेरणा मिली। समाजधर्मी बनने के लिए मार्गदर्शन मिला।

कार्यकर्त्ताओं को जीवन का मकसद मिला। हमें लगता है, ऐसे व्यक्तिमत्व अपने साथ निरंतर चाहिए, परंतु ईश्वरेच्छा!

उन्होंने तो चोला दूर किया है। उनके विचार, व्यवहार अपने सामने उदाहरण रूप हैं ही। आज तक मूर्त रूप में आपटे जी थे। अब वैचारिक अमूर्त रूप से सदा के लिए रहेंगे।

उनकी आत्मा को परमात्मा सद्गति देगा ही। उन्हें हृदय से विनम्र श्रद्धांजलि!

(लेखक अभाविप के पूर्व अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री रहे हैं।)

बाजारवाद के दौर में हिन्दी भाषा का बदलता स्वरूप

(पृष्ठ 20 का शेष)

की जगह अंग्रेजी में 'पेट्रोल', 'डीजल' या 'सेंसेक्स' लिखा रहता है। यह भूमण्डलीकृत वर्णसंकर भाषा है, जो उस ग्लोबल सोच का परिणाम है जिसके तहत प्रतीक या स्टेटस सिम्बल 'राष्ट्रीय' की जगज 'सार्वभौम' बताये जाते हैं और 'अन्तर्राष्ट्रीय' की जगह 'यूनिवर्सल' बताये जाते हैं। एन्तोनियो ग्राम्पी के अनुसार – ''यह वैध तास्थापक संरचनाओं की एक कड़ी है। तभी तो भाषा आज बहुत गहराई तक अपना तीखा असर छोड़ रही है।''

सत्य तो यह है कि हिन्दी समाचार पत्र भाषा वर्तनी या व्याकरण के नियमों का ध्यान जरा कम ही रखते हैं। कहीं व्यंजन का काम स्वरों से लेकर वाक्य गढ़ दिया जाता है तो कहीं स्वर का काम व्यंजनों से लेकर। अलग-अलग अखबारों के अलग-अलग तरीके भी हैं। कोई प्रत्ययों/परवर्ती शब्दों को मिलाकर लिखता है(जैसे – रिक्शेवाला, दूधवाला आदि, तो कोई अलग करके प्रस्तुत करता है (जैसे - रिक्शे वाला, दूधावाला आदि। समाचारपत्रों में अनुस्वार और अनुनासिक का शुद्ध प्रयोग तो कम ही देखने को मिलता है। चन्द्रबिन्दु का तकरीबन सभी अखबारों में अकाल हो गया है । ....जिस तरीके से मीडिया के विशाल महासागर में छोटा सा चन्द्रबिन्दु भटकता रहता है, आपको मां, मां, मां, मां................ कुछ भी देखने को मिल सकता है, उसी तरह नुक्ते के इस्तेमाल की भी अपनी जटिलताएं हैं ।

लिखने में चाहे नुक्ते की गलती चल भी जाये लेकिन उच्चारण में यह कहीं दूर तक भाषिक संस्कार को धक्का पहुंचाती है। प्रिंट मीडिया पर उच्चारण की त्रुटियों का आरोप नहीं लगाया जा सकता, पर इलैक्ट्रॉनिक मीडिया इस कसौटी पर जरूर कसा जाता है । निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि मीडिया ने हिन्दी को नया रंग दिया है, जो विश्व क्षितिज पर अपनी आभा बिखेर रहा है ।

2- कम्प्यूटर, इन्टरनेट और हिन्दी:-

आज का युग कम्प्यूटर युग है। हमारे जीवन में इस 'मशीनी मस्तिष्क' का इतना हस्तक्षेप हो चुका है कि इसके बिना जीवन अधूरा लगता है। मेल, इन्टरनेट, ई-वार्ता आदि की दुनिया में प्रवेश करते ही विश्व की कोई भी सूचना आसानी से प्राप्त हो जाती है। कम्प्यूटर या इन्टरनेट पर आज अंग्रेजी भाषा का ही प्रभुत्व नहीं रहा है वरन् हिन्दी ने भी अपना अधिकार प्राप्त कर लिया है। ''दो भारतीय साफ्टवेयर और हार्डवेयर कम्पनियों, एम.ए.आई.टी. और नासकॉम ने 'भारत भाषा' नामक एक परियोजना शुरु की थी, जिसके अन्तर्गत देवनागरी, गुजराती और गुरूमुखी लिपियों के लिये 'शुशा' नामक एक नई फॉण्ट प्रणाली का विकास किया गया है। ....भाषा व लिपि पर बाजार के प्रभाव का एक उदाहरण है।''

भारत में प्रथम हिन्दी निजी कम्प्यूटर (पी.सी.) आई.बी.एम. कम्पनी द्वारा लाया गया था, जिसे आज दस से भी अधिक वर्ष बीत चुके हैं। कम्प्यूटर की हिन्दी भाषा है तो तकनीकी, पर रोचक और सम्प्रेषणीय भी है।

हिन्दी का स्वरूप परिवर्तित करने में इण्टरनेट ओर मोबाइल का भी अपना अलग स्थान है। वॉइस मेल, ई-मेल, इंस्टैंट मैनेजर, वीडियो कॉन्फ्रेंस, वेब कैम, मई-पब्लिशिंग, ब्लॉगिंग की दुनिया में हिन्दी के नये रूप का अवतरण हुआ है। ब्लॉग तकनीक के विकसित होने से हिन्दी में ब्लॉग केन्द्रित पत्रकारिता का प्रारम्भ भी हो चुका है। कहने का तात्पर्य है कि इण्टरनेटर पर हिन्दी नये रूपरंग के साथ आगे बढ़ रही है। भारत में ही नहीं विदेशों में भी इण्टरनेट परिदृश्य हिन्दी भाषा-भाषी समाज के लिये उज्ज्वल है। विदेशों में हिन्दी में काम करने के लिये अनेक विंडोज, सोफ्टवेयरज विकसित किये गये हैं। अत: हम कह सकते हैं कि बाजार की ताकत ने कम्प्यूटर आदि क्षेत्रों में हिन्दी को एक व्यापक पहचान दी है।

3- विज्ञापन और हिन्दी:-

बाजारवाद के इस परिवेश में हिन्दी विज्ञापन की सर्वश्रेष्ठ भाषा सिद्ध हो रही है। विज्ञापन विक्रय कला का मौखिक अथवा मुद्रित रूप है। किसी वस्तु या उत्पाद को बेचने के लिये उपभोक्ता का ध्यान आकर्षित करने की कला वाणिज्य की शब्दावली में विज्ञापन कहलाती है । इसका उद्देश्य किसी उत्पादन को अधिकाधिक बाजार दिलवाना होता है। अत: विज्ञापन की भाषा रोचक, सरल, स्पष्ट और आम लोगों की भाषा होनी चाहिये, ताकि सामान्य जन

विज्ञापित उत्पाद को सरलता से समझ सकें। उत्पाद को लुभावना बनाने में हिन्दी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। विज्ञापन के क्षेत्र ने हिन्दी को अनूठे प्रयोग दिये हैं, जिससे उसकी अभिव्यंजना शक्ति में वृद्धि हुई है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

- 'आप सोयेंगे तो देश कैसे जागेगा' (टाटा चाय)
- सनसनाती ताजगी (लिरिल)
- आपके सपने सिर्फ आपके नहीं' (केनरा बैंक)
- अटूट बन्धन, अटूट नेटवर्क (ऐयरटेल)
- एक आईडिया, जो बदल दे आपकी दुनिया (आईडिया)

ये हृदय स्पर्शी विज्ञापन हिन्दी की ताकत को नई ऊंचाईयां दे रहे है । विज्ञापन की इस नई दुनिया में दयनीयता नहीं आत्मविश्वास है। यह आत्मविश्वास बाजार में कुल चैलेंज के साथ अपनी जमीन तलाशता है ।

उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल दिखाई देता है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया जितनी तेज होगी, बाजार का फैलाव जितना अधिक होगा, हिन्दी उतना ही नई दिशाओं में कीर्तिमान स्थापित करेगी । हिन्दी के परम्परागत रूप में फैलाव हो रहा है। हिन्दी नये जमाने के नये शब्द बेहिचक, बेधड़क, निशंक पूर्ण साहस के साथ अपना रही है । हॉट-शॉट, बॉलीवुड, ट्रेलर, चैनल, किरदार, रजिस्ट्रार, "लाईओवर, स्टेडियम, पासवर्ड की बोर्ड, नेटवर्किंग, सैन्ट्रल, सब्सक्राइबर, लाइब्रेरी, लोकेशन, शॉपिंग सेन्टर, शॉपिंग मॉल, सेंसेक्स आदि नये शब्द हिन्दी के शब्दभण्डार को समृद्ध कर रहे हैं। अंग्रेजी भाषा की लोकप्रियता का एक प्रमुख कारण यह भी है कि दुनिया भर के शब्दों को वह स्वयं में समेटे है। हिन्दी के शब्दों की भी अंग्रजी में बहुतायत है । यह विशेषता हमारी हिन्दी में भी है । पिछली सदियों में हमने हर भाषा से शब्द लिये हैं, अब बढ़ते विश्व सम्पर्क और तकनीकी विस्फोट ने इस प्रक्रिया को और भी तेज कर दिया है । यद्यपि अनेक विद्वान इसे हिन्दी की शुद्धता पर एक आघात के रूप में मानते हैं । उनका मानना है कि बाजार ने हिन्दी का दुर्भाग्यपूर्ण हश्र किया है । लेकिन हमारा मानना इन सबसे अलग है। हमारा विचार है कि हिन्दी में सभी शब्दों को समाहित करने का अद्‌भुत सामर्थ्य है। नवीन को व्यापक करने हेतु भाषा झरने की तरह प्रस्फुटित होगी । हिन्दी भाषा का सौन्दर्य ही विलक्षण है, कोई बाजार जिसे नष्ट नहीं कर सकता। वस्तुतः भाषा आम जन की होती है। यह प्रयोगशाला में नहीं गढ़ी जा सकती। जनता अपनी भाषा स्वयं रचती है और आज की पीढ़ी अपने हिसाब से हिन्दी तैयार कर रही है तो आश्चर्य की कौन सी बात है? अपनी संकीर्णताओं को त्यागते हुए हमें हिन्दी के विकास की इस धारा को अपनाना चाहिये। आज का युग हिन्दी का है और हिन्दी हमारा गौरव है। हमें विश्वास है कि शीघ्र ही वह दिन आयेगा जब हिन्दी न केवल संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा होगी वरन् सम्पूर्ण विश्व की सांस्कृतिक भाषा भी होगी।

प्रा. बालासाहब आपटे और मैं

(पृष्ठ 16 का शेष)

करने के कारण हाईकोर्ट ने उनका चुनाव रद्द किया व देश में आपातकाल की स्थिति निर्मित हुई जिसमें विद्यार्थी परिषद ने उसके खिलाफ भूमिगत आंदोलन शुरू किया। इस सत्याग्रह में बालासाहब आपटे की भूमिका प्रमुख रही। उन्होंने एक बैच लेकर सत्याग्रह किया और वे आर्थर रोड जेल में गये, उसके बाद नासिक रोड जेल में गये। नासिक रोड जेल में वहां यशवंतराव जी, अनिरूद्ध देशपांडे, सतीश मराठे और हजार से ऊपर सत्याग्रही थे। उनके साथ डेढ़ साल तक जेल में बिताया। जेल में सभी प्रकार के कार्यक्रम किये, जिससे जेल का जीवन आनंददायी हो गया और आपातकाल हटने के आखिरी दिन तक बाल आपटे, यशवंतराव केलकर इन्होंने एक दिन का भी पैरोल न लेकर जेल के सत्याग्रहियों के सामने आदर्श रखा। जेल में रहते हुए अनेक प्रकार के वर्किंग पेपर तैयार किये। आगामी भूमिका के बारे में विचार विमर्श किया, तथा जेल से बाहर आने के बाद क्या-क्या हो सकता है, इसका भी विचार किया। उसमें से पार्टियों का एकत्र होकर जनता पार्टी बनना और इंदिरा गांधी को पर्यायी विरोधी दल खड़ा होना ये सब होता गया। और जनता पार्टी आयी। परंतु इसमें विद्यार्थी परिषद पर दबाव था कि वो भी जनता पार्टी का हिस्सा बने परंतु विद्यार्थी परिषद की भूमिका स्पष्ट रूप से बनाई गई कि student movement यह स्वतंत्र रहेगी तथा किस भी पार्टी की विंग

के रूप में काम नहीं करेगी। इस कारण अरुण जेटली जो DUSU के President थे उन्हें पार्टी की केंद्रीय कार्यकारिणी में लिया गया, उन्होंने उससे इस्तीफा देकर विद्यार्थी परिषद की यह भूमिका कि student organization is not part of party politics, student organisation सत्ता से अलग रहेगी यह भूमिका विद्यार्थी परिषद की उस समय की स्पष्ट की।

उस समय विद्यार्थी परिषद सभी छात्र संघों में चुनकर आयी, परंतु विद्यार्थी परिषद पर दबाव बढ़ता गया की वह पार्टी join करें। उस समय विद्यार्थी परिषद ने चुनाव लड़ना छोड़ दिया, जब जीत रहे थे तब। इस प्रकार की भूमिका विद्यार्थी परिषद की उन दिनों रही। उसके लिये भी कारण विद्यार्थी परिषद की सामूहिक निर्णय करने की प्रक्रिया रही। यह कहने में कोई हर्ज नहीं की यशवंतराव केलकर तथा बाल आपटे इनका यह मत था कि छात्र संघ चुनाव लड़ना व छात्र संघ में नेतृत्व देना यह विद्यार्थी परिषद की स्वाभाविक गतिविधि है। परंतु अन्य सभी कार्यकर्ताओं का निर्णय था। आपटे जी व यशवंतराव जी ने उस निर्णय का पालन कराने में सभी का मुख्य रूप से सतत् मार्गदर्शन किया क्योंकि व संगठन का सामूहिक निर्णय था। ऐसा उनका स्वभाव था। यह होने के कारण चुनाव लड़ना कुछ समय के लिए छोड़ दिया, परंतु एक-दो वर्ष में ही चुनाव लड़ने का स्वाभाविक क्रम विद्यार्थी परिषद को हाथ में लेना पड़ा व पुनश्च विद्यार्थी परिषद चुनाव लड़ने लगी व जीतने लगी।

उन्हीं दिनों में असम में घुसपैठ का मुद्दा सामने आया। Save Assam today to Save India Tomorrow इस घोषणा को लेकर असम के अंदर जो घुसपैठ के विरूद्ध आंदोलन चला, इसमें स्पष्ट किया कि बांग्लादेशी नागरिक ये घुसपैठिये है, उसे बाहर करना और रैफ्युजी (Hindu is Refugee) ये अलग है, उसको निकालने की बात नहीं है, इस बात को स्प्ट करते हुए इस आंदोलन में भाग लिया। जजेस फील्ड- गुवाहाटी में सत्याग्रह किया, इसमें लाठीचार्ज महिला तथा पुरूष कार्यकर्ताओं पर हुआ। विद्यार्थी परिषद ने बांग्लादेशी घुसपैठ के मुद्दे पर आंदोलन के समय जो नारा दिया की - Save Assam Today To Save India Tomorrow वो इसलिये था क्योंकि अगर असम व सीमावर्ती क्षेत्रों में बांग्लादेशी घुसपैठ को रोका नहीं गया तो आने वाले समय में हालत बहुत गंभीर हो जायेंगे। यह विषय आपटे जी ने बैठकों व आंदोलनों में कार्यकर्ताओं के समक्ष रखा था। और हाल ही में असम के मुख्यमंत्री तरूण गागोई का यह बयान देना कि बांग्लादेशी घुसपैठियों को मानवीयता के आधार पर भारत की नागरिकता दे देनी चाहिये। उन पर कार्यवाही करने में राज्य व केंद्र सरकार भी भयभीत हैं। अगर अब भी यह मुद्दा गंभीर मानकर इन बांग्लादेशी घुसपैठयों को पहचान कर भारत से बाहर नहीं किया गया तो शायद आने वाले समय में इस दशक के अंत तक हमें देश का एक और विभाजन झेलना पड़ सकता है जिसमें पूर्वांचल के सभी राज्य भारत से अलग कर दिये जाने की आशंका है। ऐसे हालातों की शुरूआत होते हुए आज के समय में दिख रही है। मुंबई में हाल ही में हुई हिंसक घटना इसका परिचायक है।

1981 से विद्यार्थी परिषद ने डॉ. भीमराव अंबेडकर कि जयंती को सामाजिक समरसता दिवस के रूप में मनाने का विचार किया। उस समय यशवंतराव जी व आपटे जी ने समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर चलने का विषय कार्यकर्ताओं के समक्ष रखा। इसे सभी कार्यकर्ताओं ने सहर्ष स्वीकार करके अपने आचरण व कार्यपद्धति में लाकर समाजिक समरसता दिवस को अपने वार्षिक नियमित कार्यक्रम के रूप में मनाया जाने लगा। विद्यार्थी परषिद के अथक प्रयत्नों के फलस्वरूप मराठवाड़ा विश्वविद्यालय-औरंगाबाद (संभाजीनगर-महाराष्ट्र) का नामकरण डॉ. भीमराव अम्बेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय हुआ। साथ ही विद्यार्थी परिषद ने उसके पश्चात पटना में आरक्षण के मुद्दे पर बृहद सेमीनार आयोजित करते हुए देश में केवल आर्थिक ही नहीं वरन् सामाजिक एवं शैक्षिक पिछड़ापन हाने से उसको भी महत्व देते हुए OBC आरक्षण को अपना समर्थन दिया। इन सभी कार्यों में आपटे जी ने कुशल मार्गदर्शन का कार्य किया था।

80 के दशक के आखिर में जम्मू-कश्मीर से कश्मीरी हिन्दुओं को विस्थापित किया जिससे श्रीनगर मानो एक विदेशी राजधानी है, ऐसा लगने लगा। इसलिए ''चलो श्रीनगर'' का नारा देकर पूरे देश से विद्यार्थी परिषद के 10 हजार कार्यकर्ता जम्मू से आगे बढ़े तो सेना के जवानों ने विनती कि की आप वापस जाईये, आपका मुद्दा श्रीनगर आपकी राजधानी है। आपको वहां जाने का अधिकार है। परंतु आपके जाने से आतंकवादियों के खिलाफ लड़ना व आपको बचाना इन दोनों में हमारी

शक्ति बंटेगी, इसलिए कृपया आप वापस जाईये। तो इसमें वह तिरंगा ध्वज जो श्रीनगर में फहराने के लिये लेकर निकले थे वो प्रधानमंत्री वी.पी.सिंह को दिल्ली आकर दिया गया। इन सभी आंदोलनों में आपटे जी साथ में रहे।

आपटे जी प्रत्येक बैठक में उपस्थित रहते थे, निर्णय में भाग लेते थे, निर्णय को own करते थे। आपटे जी जितना प्रवास परिषद के लिये करते थे वह प्रवास स्वयं के व्यय से करते थे। प्रत्येक शनिवार, रविवार को प्रवास करते थे। प्रत्येक बैठक में, अधिवेशन में अन्य प्रांतों के कार्यक्रम के लिये उपस्थित रहते थे।

अयोध्या आंदोलन में जो कुछ हुआ उसका अध्ययन करने हेतु यहां से एक अध्ययन दल गया था, उसमें आपटे जी भी उपस्थित थे। उसकी रिपोर्ट आपटे जी ने एक ही रात में जागकर बनाई लगभग 90 पेज की। इस प्रकार अत्यंत प्रतिभा के धनी, विचारों के स्पष्ट, और स्पष्ट वक्ता थे इसमें कोई शंका नहीं है। और मित्रता, ऋजुता, स्नेह प्रेम होने के नाते उनके सम्पर्क में जो आया वह कभी भी उनसे दूर नहीं गया। परंतु जो दूर से केवल देखता था, उनको पता नहीं चलता था कि इतने स्नेही, इतने प्रेमी व्यक्ति होंगे, वह वैसे ही चला जाता था।

आपटे जी का पूरा घर-परिवार अपने कार्य से जुड़ा हुआ है, उनकी लड़की जाह्नवी ने डॉक्टर की परीक्षा पास होने के बाद 2 साल पूर्णकालिक कार्यकर्ता इस नाते कार्य किया। स्त्री शक्ति इस नाम से पूरे देश में महिलाओं के अधिकार, महिलाओं की भूमिका ऐसे विषय में काम शुरू करने की कल्पना लेकर उनकी पत्नी

1969-70 में त्रिवेंद्रम में राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ जिसमें मैं अखिल भारतीय संगठन मंत्री बना। मुझे संगठन मंत्री बनाये रखने में और उस प्रकार से मेरी भूमिका रहे, इन सभी विषयों में यशवंतराव जी व बाल आपटे इनकी महत्व की भूमिका रही। महीना डेढ़ महीना प्रवास करने के बाद मुंबई में आना। आकर उनसे मिलना और कुछ नहीं चार दिन शांत रहना, ऐसी उनकी सलाह के कारण पूर्णकालिक कार्यकर्ता के नाते Freshness हमेशा, आज भी निकला हूं ऐसी स्थिति बनी रही।

सौ. निर्मला आपटे उन्होंने ये कार्य किया। उस काम की विचार प्रक्रिया में भी आपटे जी ने सहयोग किया। और जैसे-जैसे यह काम बढ़ता गया, घर से बाहर निकलने का क्रम निर्मला जी का बढ़ता गया, परंतु उसको भी आपटे जी ने कभी विरोध नहीं किया। ये उनकी विशेषता थी।

जो व्यक्ति अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति, राष्ट्रीय परिस्थिति उस सब में संघ की क्या भूमिका होनी चाहिये, उसके बारे में स्पष्टता तथा विद्यार्थी की क्या सोच होनी चाहिये, इसके बारे में उन्होंने अत्यंत स्पष्ट रूप से कल्पना की। गत 12 वर्षों से राज्यसभा सदस्य होने के नाते भाजपा में क्या भूमिका होनी चाहिए, इस बारे में भी स्पष्टता रहती थी। भारतीय जनता पार्टी में किस प्रकार का culture विकसित होना चाहिए, कार्यपद्धति विकसित होनी चाहिए, और वह नहीं है इसके बारे में व्यथित भी रहते थे। उनके जैसा स्पष्ट वक्ता पार्टी में रहना बहुत आवश्यक था। इसलिये उनका जाना यह अकाल ही है, ऐसा हम कह सकते है। पर personally मेरे लिये तो big loss to me याने व्यक्तिगत सलाह कुछ नहीं है कि किधर जाना है। अब वास्तव रूप में यह प्रश्न आपटे जी को संबोधित करके पूछने का नहीं होना चाहिए। मैं आपटे जी को हर बात पूछता था, गांव जाऊं के नहीं, घर में जाऊं के नहीं, प्रवास के लिये जाऊं के नहीं, स्वा[illegible]य की स्थिति ऐसे छोटे-मोटे प्रश्न उनसे पूछता था। और वे भी रूचि लेकर इसके बारे में सोचते थे। ऐसे स्नेह में और सभी विषयों पर विचार करते थे। ऐसे व्यक्ति जाने के कारण loss to party, loss to ideology, loss to me personally ये सब प्रकार के विषयों का हो गया इसका पता ही नहीं चला। और जिस प्रकार उनकी अनिश्चित समय में मृत्यु आ गयी, वह तो अनापेक्षित है। 10 दिन के अंदर अच्छे से अच्छे हॉस्पीटल में अच्छे से अच्छा ट्रीटमेंट मिलने के पश्चात् भी within so short time आपटे जी चले गये। यह अनाकलनीय, असमर्थनीय तो है ही, परंतु सब प्रकार से loss हो गया, [illegible] मानना चाहिये, और ऐसा मित्र, ऐसा concern व्यक्ति, मैं प्रचारक और वे अपने निजी काम में, राजनीतिक कार्य में रहते हुए भी दत्तात्रेय जी, मुझे सारे संबंध में concern होकर विचार करते थे, मार्गदर्शन करते थे, स्नेह देते थे और हमारे प्रश्नों को समझते थे। ऐसा मित्र, ऐसा स्नेही, ऐसा विचारक मिलना मुश्किल है। इसलिये उनके जाने के कारण loss कितना है, यह चर्चा करना, यह कहना असंभव है। - मित्राय नमः

(लेखक अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय संगठन मंत्री रहे हैं वर्तमान में रा. स्व. संघ के वरिष्ठ प्रचारक हैं।)

आपका ज़िला - आपका प्रदेश

जबलपुर

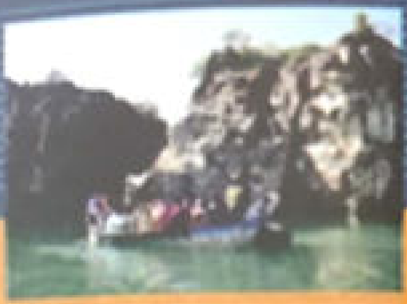

शब्द हुए साकार

खुशहाली और समृद्धि गढ़ें सब साथ बढ़ें

RNI No. 32464/78

Con. No. - DL(N)/249/10-12

राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री सुनील आंबेकर के साथ अंडमान के सेल्युलर जेल में श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए अभाविप कार्यकर्त्ता

सुप्रीम कोर्ट के अजमल कसाब को फांसी की सजा बरकरार रखने के फैसले के बाद गुवाहाटी में कसाब का पुतला दहन करते हुए कार्यकर्त्ता